वर्ष 4 अंक 2, फरवरी 2020
जे-7 श्रीराम नगर, रायपुर छत्तीसगढ़

आर. एन. आई. पंजीयन क्रमांक
CHHHIN/2017/72506

किलोल

मूल्य - 80/-

संपादक - डॉ. आलोक शुक्ला

संपादक मंडल

एम. सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, अनुपमा नलगुण्डवार, ज्योति चक्रवर्ती, द्रोण साहू, धारा यादव, डॉ. रचना अजमेरा, डॉ. माया नायर, हिमोनी बघेल, ताराचंद जायसवाल

आवरण पृष्ठ एवं ले-आऊट - रेखराज

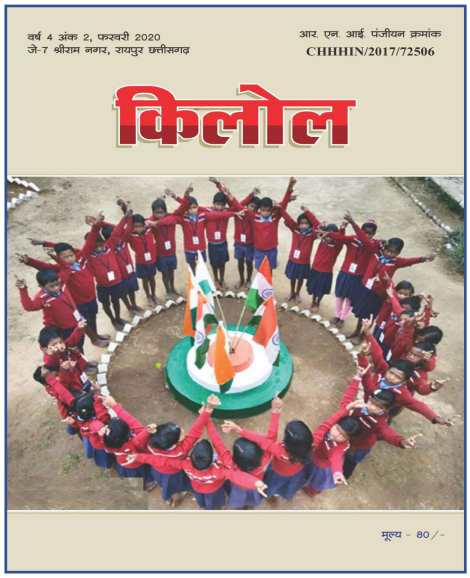

प्यारे बच्चों,

किलोल पत्रिका आप सभी के हाथ में है और आपके चेहरे पर प्यारी सी मुस्कराहट है, यह कल्पना मुझे भावविभोर कर रही है. बहुत वर्षों से यह इच्छा थी कि यह किलोल कागज में छपकर आप तक पहुँच सके. आज यह इच्छा पूरी हुई है.

प्यारे बच्चों, इस पत्रिका के माध्यम से हम आप तक रोचक सामग्री तो भेजेंगे ही, साथ ही यह भी चाहेंगे कि यह आपसे बातचीत का एक जरिया भी बने.

इसमें ऐसी कई चीजें होंगी जो हम आपसे पाना चाहेंगे जैसे - आपके बनाये चित्र, आपकी लिखी कहानियाँ, कवितायेँ, आपके व्दारा संकलित चुटकुले या ऐसी ही दूसरी चीजें भी.

और हाँ, आपकी प्यारी-प्यारी चिट्ठियों कि भी हमें प्रतीक्षा रहेगी. इस पत्रिका में आपको क्या अच्छा लगा, आप इसमें और क्या देखना चाहते हैं और वह सभी कुछ जो आपके मन में आये, आप हमें लिख कर भेज सकते हैं. हमारा पता आवरण पृष्ठ पर है.

आपका

आलोक शुक्ला

अनुक्रमणिका

किलोल की सदस्यता के लिये शुल्क 7

किलोल के ज़िला प्रतिनिधि 8

शारदे वरदान दे 10

राजिम भक्तिन कहाए 11

छेरा -छेरा के तिहार 13

छेरछेरा 15

जीवन कौशल शिक्षा 17

पतंग 19

पतंग और चूहा 21

आए खिलौने 22

पेड़ 24

सेल्फी 26

पढ़ना मतलब बढ़ना 28

काली बिल्ली 29

एक उड़ान नए पंख की 30

संघर्ष की कहानी 32

सीखें 34

हर दिन के हीरो 35

राष्ट्रभाषा हिंदी 37

कुंडलियाँ - परम प्यारी है हिंदी 39

कौन 40

बिन मौसम बरसात 41

तिरंगा के मान बढ़ाबोन 42

तिरंगा हम फहराएँगे 44

नाज है उन बहादुरों पर 45

गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं 47

इन्टरनेट 48
नवाचार - ज्ञान एक्सप्रेस 49
भारत में प्रथम महिलायें 50
भारत की मैं बेटी हूँ 51
कुछ कविताएं 52
बचपन 52
दुपहिया 53
साइकिल 54
छुक छुक गाड़ी 55
पढ़ने की संस्कृति पर स्कूली शिक्षा का दबाव 56
स्वच्छता का गाना 60
My Dream World 61
कटी पतंग 63
छात्राओं द्वारा कविता संग्रह 64
गपशप 64
आओ करें जल संरक्षण 65
सावन 66
बेटियां 67
मेरी छोटी सी कहानी 68
माहवारी जागरूकता अभियान 69
जल है हमारा जीवन 70
हरी धरती 71
हर एक कदम में स्वच्छता 72
सड़कों की सफाई 73
लड़की लड़का एक समान 74
जागो माँ 75
बेटी है कीमती 77
मैं पढ़ना चाहती हूँ 78
पहेलियाँ 80
गुण की पहचान 81

चाय पिलाई जाए 83
नवाचार - सामाजिक संगठन 'संचय' अब करेगा संचय - शिक्षक व छात्रों ने लिया संकल्प 84
Said the Shower 85
The Ant and the Fly 86
Don't leave me alone 87
तीन मित्र 89
किसनहा 91
खेलगीत 93
चूहा बोला 95
चित्र देखकर कहानी लिखो 96
श्रम ही पूजा 96
लकड़हारे की कर्तव्यनिष्ठा 97
पेड़ को न काटो 99
लोभी लकड़हारा 100
चित्र कविता 102
नवाचार - रचनात्मकता 104
शाला के अनसुलझे पहलू 106
अधूरी कहानी पूरी करो 108
लोमडी और सारस 108
कन्हैया साहू (कान्हा) व्दारा पूरी की गई कहानी 109
संतोष कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी 110
इंद्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी 111
अगले अंक हेतु अधूरी कहानी 112
मित्रता 112
बसंत पंचमी के तिहार 114
फसलों और पेड़ों के नाम खोजो 116
शून्य निवेश पर आधारित माडल - मानव का पाचन तंत्र 117
भाखा जनउला 119

किलोल की सदस्यता के लिये शुल्क

किलोल के लिये वार्षिक सदस्यता शुल्क 600 रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 10,000 रुपये है.

शुल्क जमा करने के लिये 2 बैंक अकाउंट हैं जिनमें आप नेट-बैंकिंग, पे.टी.एम. आदि ऑन लाइन तरीकों से पैसे जमा कर सकते हैं अथवा नगद शाशि भी जमा करवा सकते हैं. राशि जमा करके कृपया अपनी जमा रसीद की फोटो लेकर उसे मुझे 7000727568 पर वाट्सएप से भेज दें. साथ ही अपना मोबाइल नंबर, नाम और डाक का पूरा पता भी भेजें जिससे पत्रिका आपको डाक व्दारा भेजी जा सके.

अकांउट की जानकारी नीचे दी है -

पहला अकाउंट है -

नाम - डॉ.सुधीर श्रीवास्तव
खाता क्र. - 60349271092
बैंक - बैंक ऑफ महाराष्ट्र
शाखा - शंकरनगर, रायपुर
आईएफएससी कोड - MAHB0001441

दूसरा अकाउंट है -

Tarachand jaiswal
AC 53022710569
Pandri Tarai Raipur
IFSC CODE: SBIN0006085

किलोल के ज़िला प्रतिनिधि

जिला प्रतिनिधि बनने के लिये संपादकों से संपर्क करें.

जिला प्रतिनिधियों के अधिकार

1. उन्हें किलोल का एक फोटो आई.डी. कार्ड दिया जा सकता है.
2. उन्हें किलोल का लेटर पैड दिया जा सकता है.
3. उन्हें किलोल की ओर से सदस्य बनाने का अधिकार दिया जा सकता है.
4. उनके व्दारा अनुशंसित रचनाएं किलोल के ई-एडिशन में निश्चित रूप से प्रकाशित करने का वादा किया जा सकता है, तथा उनके व्दारा अनुशंसित रचनाओं को कागज़ पर छपे एडिशन में प्राथमिकता देने का वादा किया जा सकता है.
5. उन्हें जिले में किलोल के बैनर पर कार्यक्रम करने का अधि कार दिया जा सकता है.
6. उन्हें अपने विज़िटिंग कार्ड में किलोल जिला प्रतिनिधि छपवाने का अधिकार भी होगा.
7. यदि कोई जिला प्रतिनिधि 30 आजीवन सदस्य बना लेते हैं तो उनके जिले की रचनाओं से किलोल का एक विशेषांक निकाला जायेगा जिसका संपादन वे ही करेंगे.
8. यदि कोई जिला प्रतिनिधि 50 आजीवन सदस्य बना लेते हैं तो उनके जिले में किलोल की ओर से एक साहित्यिक कार्यक्रम किया जायेगा जिसमें उन्हें सम्मानित किया जायेगा.
9. 20 या अधिक आजीवन सदस्य बनाने वाले सभी जिला प्रतिनिधियों का राज्य स्तर पर सम्मान किया जायेगा.

जिला प्रतिनिधियों के कार्य -

1. कम से कम 10 वार्षिक सदस्य बनाने पर उन्हें जिला प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कयिा जायेगा.
2. उन्हें जिला प्रतिनिधि बनने के बाद कम से कम 10 आजीवन सदस्य 1 वर्ष में बनाने होंगे.
3. उन्हें 1 वर्ष के भीतर प्रत्येक ब्लॉक में विकास खंड प्रतिनिधि तथा प्रत्येक संकुल में संकुल प्रतिनिधि बनाना होगा.
4. ब्लॉक प्रतिनिधि एक वर्ष में कम से कम एक आजीवन सदस्य एवं 5 वार्षिक सदस्य बनाएंगे.
5. संकुल प्रतिनिधि एक वर्ष में कम से कम 5 वार्षिक सदस्य बनाएंगे.
6. जिला प्रतिनिधि वर्ष में कम से कम एक कार्यक्रम किलोल पत्रिका के लिए जिले में करवाएंगे.
7. वे अपने जिले से अच्छी रचनाएं एकत्रित करने के लिए जिम्मेदार होंगे.
8. यदि संभव होंगा तो वे जिले से किलोल के लिए विज्ञापन भी एकत्रित करने का प्रयास करेंगे.
9. किलोल को आगे बढाने के सुझाव देंगे.

शारदे वरदान दे

रचनाकार - स्नेहलता स्नेह

शारदे मुझको नवल वरदान दे
ज्ञानरुपी जलकमल वरदान दे
शत्रुता के भाव भस्म हों
मित्रता पावन तरल वरदान दे
दूर रख मिथ्या से मुझको मात हे
सत्य का हो अटल पथ वरदान दे
कथ्य भी लालित्य से परिपूर्ण हो
किन्तु भाषा हो सरल वरदान दे

घास की कुटिया में होती है बसर
स्नेह का हो उर महल वरदान दे

राजिम भक्तिन कहाए

रचनाकार - श्रवण कुमार साहू, प्रखर

उहिच्छ ह राजिम भक्तिन कहाए
तेली वंश के मान बढ़ाए,
पथरा म तैं तेल ओगराये.
संत शिरोमणि तैं हा कहाए.
प्रभु ल घानी म किंजराये.
उहिच्छ ह राजिम भक्तिन कहाए.

धरम- करम के साथ नई छोड़े,

प्रभु से अपन नाता जोड़े.
पुण्यरूपी तै धन ल जोड़े,
अपन भाग के गति ल मोड़े,
उहिच्छ ह राजिम भक्तिन कहाए.

कमलक्षेत्र के तै मान बढ़ाए,
राजीव लोचन के तै दरसन पाए,
ढाई पत्ती माँ तुलसी से,
नारायण के आसन ल डिगाये.
उहिच्छ ह राजिम भक्तिन कहाए.

तेली वंश म जनम धरे हन,
अईसन सुग्घर भाग ल पाएन.
माता राजिम के परसादे,
हमू ह सुग्घर गंगा नहायेन..
उहिच्छ ह राजिम भक्तिन कहाए.

कमलक्षेत्र पद्मावती पुरी ह,
देखो राजिम नाम धरावे.
तोर महिमा ह भारी हे दाई,
देवी देवता तोर जस गावे..
उहिच्छ ह राजिम भक्तिन कहाए.

छेरा -छेरा के तिहार

लेखक -प्रिया देवांगन प्रियु

छेरछेरा छत्तीसगढ़ के पारंपरिक तिहार पूष पुन्नी के दिन मनाये जाथे. येहा छत्तीसगढ़ के कृषि धान संस्कृति में संपन्नता अउ समानता के भावना कट करथे. छत्तीसगढ़ में ये फसल ला नवा फसल के खलियान से घर आ जाये के बाद मा घर घर जा के लोग-लइका मन धान मांगथे. लोक परंपरा के अनुसार पूष महीना के पूर्णिमा में हर साल छेरछेरा के दिन बिहनिया ले लईका मन अउ बड़े सियान मन ह हाथ म टुकना अउ बोरी ल धर के मांगे ल जाथे . नान नान लइका मन ह झोला धर के मांगे ल जाथे अउ दुवारी - दुवारी म जा के चिल्लाथे - 'छेरछेरा छेरछेरा माई कोठी के धान ल हेरहेरा, अरन बरन कोदो दरन, जभ्भे देबे तभे टरन.' के गूंज हर गलीमोहल्ला म सुनाई देथे .

रामायण मंडली के मनखे मन भी ये तिहार ल धूमधाम से बाजा गाजा के साथ मांगे बार जाथे. जे तिहार ह कृषि प्रधान संस्कृति में दानशीलता के परंपरा ल याद दिलाथे.

छेरछेरा कइसे अउ कब शुरू होइसे बाबू रेवाराम के पाण्डुलिपि से पता चलथे कि कलचुरी राजवंश के कौशल नरेश कल्याण साय अउ मण्डल के राजा के बीच म झगरा होइसे. अउ ओकर बाद मुग़ल शासक अकबर ह ओला दिल्ली बुला लिस. कल्याण साय 8 साल तक दिल्ली म रिहिस. उहा राजनीति अउ युद्धकला के शिक्षा लिसे. 8 साल बाद के कल्याण साय राजा के पुर्वाधिकर के साथ अपनी राजधानी रतनपुर वापस पहुंचीस. जब राजा ल जा के लहुटे के खबर मिलिस त सबो झन जा के स्वागत में राजधानी रतनपुर आ पहुंचीस. जा के मेल देख के रानी फुल्लकेना के तरफ से रत्न अउ सोनमुद्रा के बारिस करवाईस. अउ रानी ल जा के हर साल उही तिथि में आये के न्योता दिस. उही दिन ले ये तिहार ल धूमधाम में मनाये जाथे.

लोकपरम्परा के अनुसार धान मिसाई हो जाये के बाद गाँव में घर घर धान के भण्डार होथे. जेकर चलते मनखे मन छेरछेरा मांगे वाले मन ला दान करथे . छेरछेरा के तिहार ह अन्न दान करे के तिहार हरे . ये दिन दान पून करे ले सब प्रकार के पाप कट जाथे अउ स्वर्ग के प्राप्ति होथे अइसे बताय गेहे.

छेरछेरा

रचनाकार -योगेश ध्रुव भीम

सुग्घर पुन्नी पुनवाश,
दान बरद के तिहार,
मोर राज के चिन्हारी,
आये हावे छेरछेरा तिहार

लईका धरे टुकनी,
जवनहा धरे काँवर,
घर घर के देराउठि म,

माँगे बर अन्न पुरना ल,
आये हावे छेरछेरा तिहार

छेरछेरा माई कोठी के,
धान ल हेर हेरा बोलथें,
कोन्हों बजावत मोहरी,
कोन्हों बजावत दफड़ा,
आये हावे छेरछेरा तिहार

किसनहा मन होवत खुश,
धान-पान घलो लुवागेहे,
कोठार म सकलागेहे,
कोठी म घलो धरागेहे,
आये हावे छेरछेरा तिहार

अन्नपूर्णा ल मुठा भर,
लईका मन के टोली ल,
देवत हावे घलो दान,
पावत हावे असीस,
आये हावे छेरछेरा तिहार
अरन बरन कोदो दरन,
जभे देबे तभेच टरन,
तारा रे तारा लोहाटी तारा,
जल्दी-जल्दी बिदा करो,
जाबोन हमन दूसर पारा,
आये हावे छेरछेरा तिहार

जीवन कौशल शिक्षा

प्रस्तुतकर्ता - एम. सुधीश

आज से कुछ वर्ष पूर्व कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, पिथौरा में एक बच्ची कु. इंदु निषाद अपनी पढाई कर रही थी. वार्डन मैडम अपनी विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान देती थी. मैडम की बेटी उन दिनों मेडिकल के लिए प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रही थी. उसे देखकर इंदु ने भी डॉक्टर बनने का सपना देखना शुरू किया. छात्रावास में वह वार्डन श्रीमती सुकांति नायक की बेटी को खूब मेहनत करते देखती और स्वयं भी पूरे जोश से भर जाती. पर उसे मालूम नहीं था कि डाक्टर बनने के लिए क्या करना पड़ता है. तब उसे कैरियर के बारे में छात्रावास में लेक्चर सुनने को मिला.

छात्रावास में ही वार्डन नें एक स्लोगन लिख रखा था - "जो जैसा सोचता है वो वैसा बन जाता है." यह बात उसने अपने दिमाग में बैठा ली . उसने इस वाक्य को अपने घर में भी बड़े चार्ट में लिखा और उसके नीचे डॉ. इंदु निषाद के रूप

में अपना नाम लिखा और बचपन से ही डाक्टर बनने का लक्ष्य रखकर अपनी पढाई और मेहनत जारी रखी.

इसने कक्षा आठवी उत्तीर्ण होने के बाद कक्षा नवमीं में उसने प्रवेश लिया पर अपने पुराने हास्टल से जुडी रही. नई वार्डन श्रीमती लूनेश्वरी बिसेन से वह अक्सर बायोलॉजी में शंका समाधान के लिए आती रही. कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय के शिक्षिकाओं एवं वार्डन सभी ने आवश्यकतानुसार उसकी सहायता की ताकि वह अपनी पढाई जारी रख सके.

आज वह रायपुर के शासकीय मेडिकल कालेज में एम.बी.बी.एस. की छात्रा है. जीवन कौशल में से एक महत्वपूर्ण कौशल है “अपना लक्ष्य निर्धारित करना” इस कौशल के आधार पर आप भी अपने जीवन के लिए लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं. आपने किया कि नहीं ?

पतंग

रचनाकार - योगेश ध्रुव भीम

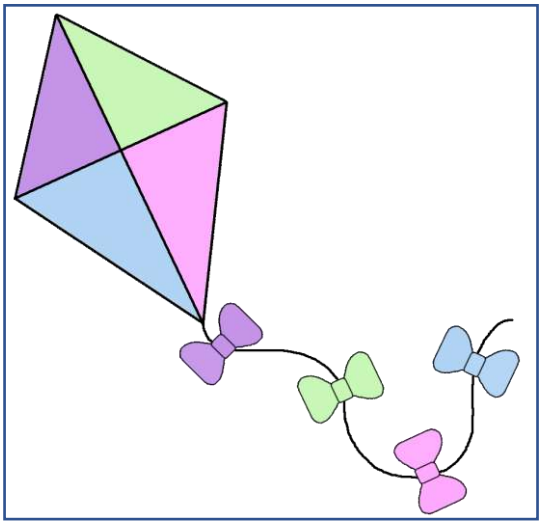

नील गगन में स्वछंद
उमड़-घुमड़ कर उड़ती
पीले- काली, रंग- बिरंगी
उड़ती -उड़ती मैं पतंग
कागज से तन बना है
नथ लगी हाँकने को
लंबी डोरी से चलती
उड़ती-उड़ती मैं पतंग
न घबराती,डर किसी से
उड़ती हूँ नील गगन पर
साहस देती डोरी मेरी

उड़ती-उड़ती मैं पतंग
दुश्मन को भाँप चली मैं
युद्ध क्षेत्र उस नील गगन

लगे काटने डोरी करतन
उड़ती-उड़ती मैं पतंग

मुझे साधती ओ साधक
डोरी लंबी बढ़ाओ जरा
जीवन की आपा-धापी में
उड़ती उड़ती मैं पतंग
लंबी यात्रा नील गगन की
सहसा आगे आगे बढ़ती
भय जरा न मन में रखती
उड़ती -उड़ती मैं पतंग
जीने की नई राह बताती
जीवन की एक नई कला
पथ को देती है उमंग
उड़ती -उड़ती मैं पतंग

पतंग और चूहा

रचनाकार - गोपाल कौशल

हाथी दादा लेकर आएं
बाजार से पतंग न्यारी
चूहा बोला मुझको दे दो

लगती है कितनी प्यारी
चूहेजी ने पतंग का जैसे
ही पकडा मांजा - धागा
नटखट पतंग के संग
सर-सर उड गए चूहे राजा

आए खिलौने

रचनाकार -टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

मड़ई-मेले में आए खिलौने
नन्हे-मुन्नों को भाए खिलौने

देखो शेर उड़ाता प्लेन
और चीता चलाता ट्रेन
कप - प्लेट किचन सेट
हैं सभी के फिक्स रेट
कोई नहीं आए औने-पौने
मड़ई-मेले में आए खिलौने
बाइक, बस, ट्रक, कार
बम - बंदूक और तलवार
ऊँट - बंदर ढोल बजाते
हिरण, लोमड़ नाचते - गाते
भालू ठुमकता जाए बौने
मड़ई-मेले में आए खिलौने

पंख पसारे उड़ती चिड़िया
कितनी सुंदर दिखती बढ़िया
गुलाब, गेंदा, चंपा, चमेली
तितलियाँ बैठीं बन सहेली
भौंरे गीत सुनाए सलौने
मड़ई-मेले में आए खिलौने

पेड़

रचनाकार - टेकराम ध्रुव दिनेश

प्यारे बच्चो इन पेड़ों को
मित्र सदा तुम मानो
बड़े काम के पेड़ ये सारे
इनके महत्व को जानो

इन पेड़ों से ही धरती में
आती है हरियाली
हरे - भरे पेड़ों से धरती
लगती है बहुत निराली

ऑक्सीजन के रूप में
हम जो सांस लेते हैं
ये सारे पेड़ ही तो हैं
जो ऑक्सीजन देते हैं

याद रखो जितनी धरती को
इन पेड़ों से सजाएंगे
उतनी ही शुद्ध हवा हम
अपने सांसों में पाएंगे

सेल्फी

रचनाकार -महेन्द्र देवांगन माटी

जिधर देखो उधर, सेल्फी ले रहे हैं
ओरिजनल का जमाना गया
बनावटी मुस्कान दे रहे हैं

भीड़ में भी आदमी आज अकेला है
तभी तो बनावटी मुस्कान देता है
और जहाँ भीड़ दिखे वहाँ
खुद मुस्करा कर सेल्फी लेता है

भीड़ में दिख गयी कोई अच्छी सी लड़की
तो आदमी पास चला जाता है
चुपके से सेल्फी लेकर
अपने दोस्तों को दिखाता है

दिख गया कहीं जुलूस तो
लोग आगे आ जाते हैं
और एक सेल्फी लेकर
पता नही कहां गायब हो जाते हैं

खाते पीते उठते बैठते
लोग सेल्फी ले रहे हैं
मैं समाज के अंदर हूँ
ये बतलाने फेसबुक और
वाटसप पर भेज रहे हैं

सच तो ये है
आदमी कितना अकेला हो गया है
एक फोटो खींचने वाला भी
नहीं मिल रहा
इसीलिए तो सेल्फी ले रहा है

पढ़ना मतलब बढ़ना

रचनाकार - द्रोण साहू

जिसने पढ़ना सीख लिया
उसने बढ़ना सीख लिया
दुनिया के जंजालों से
उसने लड़ना सीख लिया
मुश्किलों के शिखर पर
उसने चढ़ना सीख लिया
आने वाले तूफानों के आगे
उसने अड़ना सीख लिया
खुद के हाथों खुद को ही
उसने गढ़ना सीख लिया

काली बिल्ली

लेखिका - श्वेता सोनी

एक बार की बात है एक घर में दो बिल्लियां थीं. एक बिल्ली सफेद और दूसरी काली. काली बिल्ली को देखकर सफेद बिल्ली अक्सर सोचती थी कि मेरा रंग काला क्यों नहीं है. एक दिन वह परेशान सी इधर-उधर घूम रही थी.उसने देखा टेबल पर जामुन रखे हुए हैं उसके मन में एक विचार आया.उसने एक-एक कर सारे जामुन खा लिए. उसे एक बात अब समझ में आने लगी थी. वह जो भी चीज खा रही है उसी के रंग की हो जा रही है.उसने सोचा इसे जांचा जाए. उसने लाल अनार खाया उसका रंग लाल हो गया. वह मूछों ही मूछों में मुस्कराई. उसे समझ में आ गया था कि उसे क्या करना चाहिए. उसने काले रंग के अंगूर खाए और अंगूर का जूस भी पी लिया. उसने देखा वह काली बिल्ली बन गई थी.वह खुशी से झूम उठी।. अरे!! यह क्या हुआ? वह तो जामुनी रंग की हो गई थी. इसके बाद उसने संतरा खाया फिर अपने शरीर की तरफ देखा. वह संतरे के रंग की हो गई थी. इसके बाद वह केले के पास गई. उसने केला खाया और अपने शरीर को देखा वह फिर से सफेद रंग की हो गई थी।.

एक उड़ान नए पंख की

लेखक - योगेश ध्रुव "भीम"

कुछ करने का जज्बा, मन की उमंग
मुश्किलें कुछ भी हो,आज न हार होगी

इस बात को आज साबित कर दिखाया आदिवासी वनांचल धुर नक्सली क्षेत्र जिला दन्तेवाड़ा विकासखंड कटेकल्याण ग्राम पंचायत बेंगलूर के कक्षा सातवीं के छात्र मद्दा राम कवासी पिता श्री डोमा राम कवासी ने अपने एक अच्छी सोच और पक्के इरादे से आज सबके बधाई के पात्र बन गए है क्योंकि ऐसा होना भी चाहिए मद्दा राम अपने दोनों पैरों से पोलियो के कारण दिब्यांग है, इसे अपनी कमजोरी न मानते हुए वह अपने साथियों के साथ अच्छे से क्रिकेट का खेल खेल लेता है और साथ -साथ वह चौका, छक्का मारने के साथ वह पैरो के बल घसीट कर रन भी लेता है. यह उन सब विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणा स्त्रोत है जो सब कुछ होते हुए भी अपने आप को कमजोर महसूस करते हैं मद्दा राम खुद मीडिया के सामने अपनी आप बीती के माध्यम से कहते हैं मेरे पिता जी एक किसान हैं मैं अपने भाई बहनों में सबसे बड़ा हूँ, खुद के बनाये हुये बल्ले से अपने साथियों के साथ क्रिकेट का खेल खेलते है मेरे सभी साथी खेल खेलने में सहयोग करते है वह रोज स्कूल में अपने साथियों के साथ क्रिकेट का खेल खेलता हैं, एक दिन उसके शिक्षक ने उनके खेल का वीडियो बनाकर फेशबुक में शेयर कर दिया जैसे वीडियो वाइरल हुआ वीडीयो को बहुत लाइक मिले साथ ही साथ यह वीडियो हमारे

भारत में क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले महान शख्स भारतरत्न सचिन तेंडुलकर को दिनांक 13/01/2020 देखा उन्होंने लाइक करते हुए अपना विचार शेयर किया कि यह अद्भुत वीडियो नए वर्ष में कुछ नया लेकर आया है, जिससे हम सबको प्रेरणा लेनी चाहिए उन्होंने इस विडियो को शेयर किया जिससे मद्दा राम कवासी को एक नयी पहचान मिल गयी छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने भी अपना संदेश और बधाई प्रेषित की. शासकीय माध्यमिक शाला बेंगलूर विकासखंड कटेकल्याण, जिला दन्तेवाड़ा के साथ-साथ पूरे गांव के लिए एक मिसाल बन गया, एक अच्छी सोच नेक इरादा में एक नई मंजिल की ओर हमेशा अग्रसर करता है. आज मद्दा राम को मीडिया के माध्यम से एक पहचान मिल गयी उन्होंने साबित भी कर दिखाया यदि मन में कुछ करने का जुनून हो तो कठिन कार्य को भी किया जा सकता है, यह उन विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणा स्रोत है जो सब कुछ होते हुए भी अपने आपको कमजोर महसूस करता है, मद्दा राम के सहयोग के लिए जिला शिक्षाधिकारी ने व्हीलचेयर एवं क्षेत्र के विधायक श्रीमती देहुति कर्माजी ने उन्हें पढ़ाई हेतु गोद भी ले लिया है. मद्दा राम उस समय खुशी से फूला न समाया जब अचानक श्री सचिन तेंदुलकर के द्वारा उपहार स्वरूप क्रिकेट का पूरा किट उनके डाक पते पर पोस्ट के माध्यम से भेजा और साथ मे एक पत्र भी. पत्र में सचिन जी लिखते है कि,

प्रिय मद्दा राम

आप जिस तरह इस खेल का आनंद ले रहे हैं उसे देख कर अच्छा लगा. ये आप और आपके दोस्तों के लिए मेरी तरफ से प्यार भरी भेंट, खेलते रहिए.

सचिन तेंदुलकर

इस उपहार को पाकर एक नन्हे पंख में मानो उड़ान की ऊर्जा भर गयी मद्दाराम अपनी शारीरिक अक्षमता को भूलकर उड़ान की तैयारी में आगे पथ पर बढ़ रहे हैं. आप निरतंर इसी तरह आगे बढ़ते रहो और हम सबके प्रेरणा स्त्रोत बने रहो.

संघर्ष की कहानी

रचनाकार - संतोष कुमार कौशिक

आओ बच्चों तुम्हें सुनाऊँ, संघर्ष की कहानी
आँखों देखी बात बताऊँ, मैं अपनी जुबानी
एक माँ के दो पुत्र हुए, राम- श्याम नाम थे उनके
राम 7 वर्ष 2 वर्ष का श्याम, हंसते खेलते परिवार थे जिनके
माँ के पेट में दर्द हुआ, घरवाले कुछ समझ ना पाए
इलाज करने के पहले, भगवान उसे बुलाए
बाप निठल्ला घूमता था, बच्चों का भार उठा ना पाए
कुछ वर्ष बीता नहीं, दूसरी दुल्हनिया वो ले आए
माँ बच्चों को संभाल न पाई, सौतेली माँ का तेवर दिखाए
कान पकड़कर पति को, शहर की ओर वे भगाए
बच्चों का कोई पालनहार नहीं, एक विधवा दादी माँ है प्यारे

उसके भी चार पुत्र थे, लेकिन कोई बने नहीं सहारे
दादी माँ असहाय होते हुए भी, हिम्मत उसने जुटाई
कहीं से दो वक्त की रोटी लाकर बच्चों की भूख मिटाई
दादी माँ को संघर्ष करते हुए 10 वर्ष बीत गए
इस बीच में उसके हालचाल पूछने कोई नहीं आए
राम होनहार लड़का था, दादी के कर्ज चुकाने की बारी आई
भार उठाया दादी माँ का और श्याम छोटा भाई
गाँव के पास ही कारखाने में, राम काम करने जाता था
जो भी परिश्रमिक मिलता उसमें घर का खर्चा चलाता था
भाई को पढ़ाना भूला नहीं, स्वयं भी पढ़ाई करता था
रात में वह काम करता, दिन में वह स्कूल जाता था
राम संघर्ष करते- करते,18 वर्ष के हो गए
दादी माँ दोनों बच्चों को छोड़, स्वर्ग सिधार गए
दोनों भाई का पढ़ाई पूरा हुआ, काम करने लग गए
घर का खर्चा कर कुछ बचत किया, खुशी से जीवन उन लोगों ने बिताए

शिक्षा - सुनो बच्चों जीवन में कठिनाई आए तो, हिम्मत ना हारो
दादी माँ और राम की तरह जीवन में संघर्ष करो

सीखें

रचनाकार - भोलाराम सिन्हा

भारत के वीरों से देश के लिए संघर्ष करना सीखें
अपनी पावन धरती के लिए बलिदान करना सीखें
देश को आज़ाद कराने के लिए अनेक वीर शहीद हुए
ऐसे वीर शहीदों का सम्मान करना सीखें
अपने लिए जिए, तो क्या जिए यारो
दीन - दुखियों का सहारा बनना सीखें
हम भारत के और भारत हमारा

बाती की तरह जलकर प्रकाश करना सीखें

हर दिन के हीरो

लेखक - विकास कुमार हरिहारनों

बनो जी तुम बनो
हर दिन के हीरो
खुद के ही काम के
बन जाओ हीरो
चाहे हो शिक्षक
चाहे विद्यार्थी
हो चाहे डॉक्टर
या फिर इंजीनियर
खुद के ही तुम बनो
एक्सीलेंस सुपीरियर
काम को ही अपने
करो पहले से बेहतर

हो उसमें उन्नत
देकर अपना सब कुछ
तुम बनो सब के
सब हों तुम्हारे,
लेकर सब को चलोगे
तो ही तो हीरो
बाधक न खुद के
ना ही किसी के
बढ़ो सब के संग
जिंदगी जियो ढंग से
मन से रहो हमेशा प्रसन्न
ऊर्जा समाहित कर
भरें उसमें रंग
तभी तो तुम बनोगे
हर दिन के हीरो

राष्ट्रभाषा हिंदी

रचनाकार -मनोज कुमार पाटनवार

हिन्दी दिवस प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाता है. 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी. इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिये राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर वर्ष 1953 से पूरे भारत में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी-दिवस के रूप में मनाया जाता है. एक तथ्य यह भी है कि 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी के पुरोधा व्यौहार राजेन्द्र सिंहा का 50-वां जन्मदिन था, जिन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए बहुत लंबा संघर्ष किया. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करवाने के लिए काका कालेलकर, मैथिलीशरण गुप्त, हजारीप्रसाद द्विवेदी , सेठ गोविन्ददास आदि साहित्यकारों को साथ लेकर व्यौहार राजेन्द्र सिंह ने अथक प्रयास किए.

वर्ष 1918 में गांधी जी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन में हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने को कहा था. इसे गांधी जी ने जनमानस की भाषा भी कहा था. वर्ष 1949 में स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर 14 सितम्बर 1949 को काफी विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया जो भारतीय संविधान के भाग 17 के अध्याय की अनुच्छेद 343(1) में इस प्रकार वर्णित है -

संघ की राष्ट्रभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी. संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा. यह निर्णय 14 सितम्बर को लिया गया, इसी दिन हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार व्यौहार राजेन्द्र सिंहा का 50-वां जन्मदिन था, इस कारण हिन्दी दिवस के लिए इस दिन को श्रेष्ठ माना गया था. हालांकि जब राष्ट्रभाषा के रूप में इसे चुना गया और लागू किया गया तो गैर-हिन्दी भाषी राज्य के लोग इसका विरोध करने लगे और अंग्रेज़ी को भी राजभाषा का दर्जा देना पड़ा. इस कारण हिन्दी में भी अंग्रेज़ी भाषा का प्रभाव पड़ने लगा.

हिन्दी दिवस के दौरान कई कार्यक्रम होते हैं. इस दिन छात्र-छात्राओं को हिन्दी के प्रति सम्मान और दैनिक व्यवहार में हिन्दी के उपयोग करने आदि की शिक्षा दी जाती है, जिसमें हिन्दी निबंध लेखन, वाद-विवाद हिन्दी टंकण प्रतियोगिता आदि होती है. हिन्दी दिवस पर हिन्दी के प्रति लोगों को प्रेरित करने हेतु भाषा सम्मान की शुरुआत की गई है. यह सम्मान प्रतिवर्ष देश के ऐसे व्यक्तित्व को दिया जाएगा जिसने जन-जन में हिन्दी भाषा के प्रयोग एवं उत्थान के लिए विशेष योगदान दिया है. इसके लिए सम्मान स्वरूप एक लाख एक हजार रुपये दिये जाते हैं. हिन्दी में निबंध लेखन प्रतियोगिता के व्दारा कई जगह पर हिन्दी भाषा के विकास और विस्तार हेतु कई सुझाव भी प्राप्त किए जाते हैं. लेकिन अगले दिन सभी हिन्दी भाषा को भूल जाते हैं. हिन्दी भाषा को कुछ और दिन याद रखें इस कारण राष्ट्रभाषा सप्ताह का भी आयोजन होता है. जिससे यह कम से कम वर्ष में एक सप्ताह के लिए तो रहती ही है.

कुंडलियाँ - परम प्यारी है हिंदी

लेखक - डीजेन्द्र क़ुर्रे 'कोहिनूर'

हिंदी भाषा से मिली,
जग में है पहचान..
स्वर- व्यंजन के मेल से,
मिलता अनूप विधान..
मिलता अनूप विधान,
सृजन को करता पावन..
भाव भरो जो सार,
लगेगा वह मनभावन ..
कह डिजेन्द्र करजोरि,
देश की है जो बिंदी..
जिस पर हमें गुमान,
परम प्यारी है हिंदी..

कौन

रचनाकार - नेमीचंद साहू

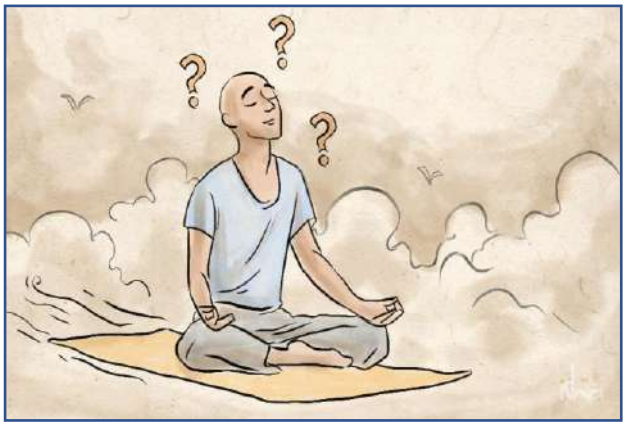

झाँक रहे हैं इधर-उधर सब,
अपने अंदर झाँके कौन ?
ढूंढ रहे दुनिया में कमियाँ,
अपने मन में झाँके कौन?

दुनिया सुधरे सब चिल्लाते,
खुद को आज सुधारे कौन?
पर उपदेश कुशल बहुतेरे,
खुद पर आज विचारे कौन?

हम सुधरे तो जग सुधरेगा,
सीधी बात स्वीकारे कौन?
जैसी करनी वैसी भरनी
दिल में इसे उतारे कौन ?

गागर में सागर भरा है
मोती आज निकाले कौन?

बिन मौसम बरसात

रचनाकार -महेन्द्र देवांगन ' माटी'

बिन मौसम अब बरसा होवय, गिरय झमाझम पानी
धान पान हा कइसे बाँचय, होय करेजा चानी
खेत खार मा करपा माढय , होवत हे नुकसानी
कइसे लानय अब किसान हा, बुड़गे सब्बो पानी
माथा धरके बइठे हावय, रोवय सबो परानी
धान पान हा कइसे बाँचय, होय करेजा चानी
करजा बोड़ी अब्बड़ हावय, छूट कहाँ अब पाबो
धान पान हा होवय नइहे, काला अब हम खाबो
खरचा चलही कइसे संगी, कइसे के जिनगानी
धान पान हा कइसे बाँचय, होय करेजा चानी
बिन मौसम अब बरसा होवय, गिरय झमाझम पानी
धान पान हा कइसे बाँचय, होय करेजा चानी

तिरंगा के मान बढ़ाबोन

रचनाकार -तुलस राम चंद्राकर

हमर तिरंगा सबले बढ़िया
लहर लहर लहराबोन
तीन रंग के हमर तिरंगा
ऐखर मान बढ़ाबोन
ये तिरंगा ल पाये खातिर
कतको जान गवाईस
कतको वीर बलिदानी होगे

तब आजादी आईस
ईखर मान बढ़ाए बर
हमन तिरंगा फहराबोन
तीन रंग के हमर तिरंगा
ऐखर मान बढ़ाबोन
भगत, आजाद, सुभाष ह संगी
जय हिंद नारा बोलाईस
आजादी ल पाए खातिर

जनता मन ल जगाईस
वन्दे मातरम के गाना ल
मिलके सब झन गाबोन
तीन रंग के हमर तिरंगा
ऐखर मान बढ़ाबोन
सत्य अहिंसा के बात ल
गाँधी बबा ह बाताईस
स्वदेशी अपनाए खातिर
चरखा खुब चलाईस
कतका दुख ल पाईस सबझन
कइसे हमन भूलाबोन
तीन रंग के हमर तिरंगा
ऐखर मान बढ़ाबोन

तिरंगा हम फहराएँगे

रचनाकार -प्रिया देवांगन 'प्रियू,'

तीन रंगों से बना तिरंगा, आज उसे फहराएँगे
देखो भारत की चोटी पर, शान से हम लहराएँगे

नहीं झुकने देंगे तिरंगा, इसका मान बढ़ाएँगे
वीर सपूतों के आगे हम, अपना शीश झुकाएँगे

चन्द्रशेखर और भगत सिंह का, नारा हम लगाएँगे
भारत माता की जय बोलकर, अपना शीश नवाएँगे

भारत माँ की रक्षा के खातिर, हम शहीद हो जाएँगे
आँच नहीं आने देंगे हम, सीमा पर डट जाएँगे

नाज है उन बहादुरों पर

रचनाकार - डिजेन्द्र कुर्रे

(1)

तिलक लगा ले माथे पर,
शस्त्र उठा ले हाथों पर.
वन्दे मातरम की गूंज से,
निकल पड़े मैदानों पर.

(2)

योगेंद्र अनुज अमोल विजयंत
जांबाज सिपाही थे कारगिल पर.
कर चढ़ाई टाइगर हिल में,
दिखाया साहस अपने दम पर.

(3)

तोपें जब चली रण पर,
गोले बरस रहे थे उन पर.
कदम बढ़ रहे थे वीरों के,
भारी पड़ रहे थे दुश्मनों पर.

(4)

रक्षा करते हम मानव की,
नाज है उन बहादुरों पर.
कारगिल के इन सपूतो को,
नमन करूँ इनकी कुर्बानी पर.

(5)

आँच न आएं देश में,
तैनात रहते वो सरहद पर.
देश के वीर जवानों ने,
तिरंगे की शान बचाने पर.

गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं

रचनाकार -प्रिया देवांगन 'प्रियू,'

गणतंत्र के दिन हर आही
मिलजुल सब झन खुशी मनाहीं

नाचहीं- गाहीं लइका मन हर,
अउर तिरंगा ला लहराहीं

आहीं बड़े - बड़े सियान मन,
भासन मा उन ग्यान बताहीं

जउन देस के करें हें रक्षा,
उँखर मन के गुन ला गाहीं

बलिदान के का हवे मतलब,
ओहू ला हमला समझाहीं

इन्टरनेट

लेखक -चानी ऐरी (शिक्षक)

विश्व में उपलब्ध है आज तक
हर विषय की जो भी जानकारी
घर बैठे मिनटों में मिल जाती है
"इंटरनेट की हो गई बलिहारी".
हर काम को, आसान बना कर
विश्व को एक सूत्र में बांध दिया
रोजमर्रा जीवन का अंग बना कर
मानव जीवन को साध लिया.
इंटरनेट पर पल भर में ही भैया
विश्व भर की खबरें आ जाती
दुनिया भी विषयों की जानकारी
पलक झपकते ही पा जाती है.
कंप्यूटर युग का हुआ कमाल
इंटरनेट घर-घर में छा रहा
तेज रफ्तार बदलते युग में विश्व सारा
हथेली में आ रहा "इंटरनेट है कमाल"

नवाचार - ज्ञान एक्सप्रेस

प्रस्तुतकर्ता एवं चित्र - निरंजन लाल पटेल

उद्देश्य:- छात्र-छात्राओं को ज्ञान एक्सप्रेस के माध्यम से खेल-खेल मे अंक एवं शब्द ज्ञान की जानकारी कराना..

क्रियान्वयन:- स्कूल परिसर में ज्ञान एक्सप्रेस (रेलगाड़ी) बनायी गयी है, जिसमें गिनती, अंग्रेज़ी एल्फाबेट, हिंदी की वर्णमाला आदि अंकित की गयी है. बच्चे रेलगाड़ी में सफर करते हुए अंकों शब्दों आदि को पढ़ते हैं.

लाभ:-

बच्चे खाली समय में भी पढ़ते हैं

खेल-खेल में बच्चे बहुत आसानी से सीखते हैं.

भारत में प्रथम महिलायें

संकलनकर्ता -मनोज कुमार पाटनवार

- इंग्लिश चैनल तैरकर पार करने वाली प्रथम महिला (भारत एवं विश्व) - आरती साहा
- प्रथम महिला राज्यपाल - सरोजिनी नायडू (उत्तर प्रदेश)
- प्रथम महिला आई.पी.एस. - किरण बेदी
- नोबेल पुरस्कार विजेता प्रथम महिला - मदर टेरेसा (शान्ति हेतु)
- मिस वर्ल्ड से सम्मानित प्रथम भारतीय महिला - रीता फारिया
- सर्वोच्च न्यायालय की प्रथम महिला न्यायाधीश - न्यायमूर्ति मीरा साहिब फ़ातिमा बीबी
- उच्च न्यायालय की प्रथम महिला न्यायाधीश - न्यायमूर्ति लीला सेठ
- माउंट एवरेस्ट विजेता प्रथम महिला पर्वतारोही- बछेन्द्री पाल
- साहित्य अकादमी पुरस्कार' विजेता प्रथम महिला साहित्यकार - अमृता प्रीतम (1956)
- भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' से पुरस्कृत प्रथम महिला - आशापूर्णा देवी
- अंटार्कटिका पहुँचने वाली प्रथम महिला - मेहर मूसा (1977)
- एयर लाइन्स में प्रथम महिला पायलट - कैप्टन दुर्गा बैनर्जी
- ओलम्पिक खेलों में पदक जीतने वाली प्रथम महिला खिलाड़ी - कर्णम मल्लेश्वरी (भारोत्तोलन, सिडनी 2000)
- एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली प्रथम महिला - कमलजीत संधु (1970, 400 मीटर दौड़)
- अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में पदक जीतने वाली प्रथम महिला - अंजू बॉबी जॉर्ज
- अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 100 विकेट प्राप्त करने वाली प्रथम महिला - डायना एडुलजी (1986)

भारत की मैं बेटी हूँ

रचनाकार -वसुन्धरा कुर्रे

भारत की मैं बेटी हूँ,
भारत को संस्कार देती हूँ.
हर काल में मैं अपना एक नया परिचय देती हूँ,
युग-युग से मैं सावित्री, सीता और गायत्री हूँ.
भारत की मैं बेटी हूँ,
भारत को संस्कार देती हूँ.
सज्जन के लिए मैं सहेली हूँ,
दुर्जन के लिए मैं पहेली हूँ.
दुश्मनों के लिए मैं काली हूँ,
मैं सुबह की लाली हूँ ,
मैं भारत की बेटी हूँ,
भारत को संस्कार देती हूँ.
मैं बेटी अबला नहीं,
मैं बेटी सबला हूँ.
मैं कोमलांगी कमला, सरला और विमला हूँ,
मैं ही चावला, मैं ही किरण बेदी हूँ.
मैं ही इंदिरा, मैं ही प्रतिभा और मैं ही बेटी टेरेसा हूँ,
भारत की मैं बेटी हूँ.
भारत को संस्कार देती हूँ.

कुछ कविताएं

लेखक एवं चित्र - आशा उज्जैनी

बचपन

ख्वाहिशें चल पड़ी करने जहां की सैर,
अरमानों की साइकिल आसमां की लेने खैर,
आगे - आगे भरोसा, पीछे-पीछे दोस्ती.
चल पड़े दोनों करने सकल मस्ती.
भोला सा बचपन दिन मणि से सपने
वीथीयों पर दौड़ती मुस्कानों की हस्ती

दुपहिया

जीवन है गतिमान
हम हैं इसके प्रतिमान
चल - चल भैया, चली दुपहिया,
हम तुम इसके बने खिवैया.
पगडंडी है लंबी चौड़ी,
उस पर साइकिल जाती दौड़ी.
आगे पीछे, बारी-बारी
तेरी मेरी यारी न्यारी.
ना चिंता ना फिकर है कोई,
बचपन का मुरीद हर कोई,
चाहे जितनी कर लो मस्ती,
बना रहे भरोसा और दोस्ती.

साइकिल

कितनी सुहानी भोर,
चले हरियाली की ओर.
दीदी की साइकिल
चुपके से ले आया हूं.
मुझ पर रख भरोसा,
धीमे-धीमे ही चलाऊंगा .
तनिक करले मस्ती,
पीछे जमाए रखना दृष्टि.

छुक छुक गाड़ी

कच्ची पक्की सड़कों पर, दौड़े अपनी गाड़ी.
धूप घनी हो, बारिश भारी, रहे यह अपनी यारी.
कोई रोड़ा रास्ते पर हो, बजा तूं घंटी यारा.
मोड़ अगर आ जाए तो, दूं मैं हाथ से इशारा.
विश्वास, प्रेम, स्नेह से, आ भर लें जीवन गागर.
प्राणों से भी पीछे ना हटूं, जो मुश्किल पड़े अगर.
दोस्त तेरी मधुर मुस्कान, है सबसे अनमोल.
तेरी मेरी दोस्ती का नहीं है कोई मोल.

पढ़ने की संस्कृति पर स्कूली शिक्षा का दबाव

लेखक- प्रमोद दीक्षित 'मलय'

लेख की शुरुआत मैं मनोशिक्षाविद् विलियम हॉल के एक वाक्य से करता हूँ, जिसमें वह कहते हैं कि "यदि हम बच्चों को बोलना सिखाते होते तो वे शायद कभी बोलना नहीं सीख पाते". इस वाक्य के एक सिरे को पकड़ कर यदि हम स्कूलों में बड़ों द्वारा सिखाये जा रहे 'पढ़ना' का संदर्भ ग्रहण करें तो पाते हैं कि 'पढ़ना' अपने मूल अर्थबोध के प्रकटीकरण से इतर केवल छपी सामग्री के वाचन तक सीमित कर दिया गया है. जबकि पढ़ना केवल स्कूली शिक्षा की पाठ्यपुस्तकें पढ़ पाने के सीमित अर्थ के दायरे से बाहर किसी व्यक्ति के अस्तित्व की पहचान है, स्व की यात्रा है. पढ़ना बंधनों से मुक्ति का मार्ग है, आनन्द की पीयूष धारा में आत्मा का अवगाहन है. लक्ष्य का संधान है तो नवल ऊर्जा का अनुसंधान भी. क्रान्ति का ज्वार है तो लोक का रागात्मक प्यार भी. पढ़ना स्वयं को गढ़ना है और मानवता का उत्तुंग शिखर चढ़ना भी.

स्कूलों में पढ़ना सिखाना दरअसल एक पीड़ादायक अनुभव है जो उबाऊ, यांत्रिक, अर्थहीन एवं परंपरागत खांचे में सिमटी एक अंतहीन जटिल प्रक्रिया है. वास्तव में स्कूल पढ़ने की संस्कृति के प्रवाह में एक बड़ी बाधा के रूप में खड़े नजर आते हैं. हमारी विद्यालयी एवं सामाजिक व्यवस्था, स्कूली ढांचा, परीक्षा प्रणाली और अभिभावकों के सपनों के इर्दगिर्द घूमती, बच्चों में परम्परागत 'रटना' प्रणाली को बढ़ावा देने वाली है, जो पाठ्यपुस्तकों के तथ्यों, सिद्धांतों, संदर्भों को रटने और परीक्षा में ज्यों -का- त्यों उगल देने की हिमायती है. असल में बच्चों द्वारा पढ़ने से उपजे उनके मौलिक विचारों, अनुभवों, कौशलों, दृष्टिकोण एवं उनके स्थानीय ज्ञान और कल्पना के लिए स्कूल में कोई जगह नहीं बचती है. स्कूल जो बच्चों के सीखने, नया रचने-गुनने एवं गढ़ने और जीवन में आगे बढ़ने का एक प्रेरणा स्थल होना चाहिए था बजाय उसके वह एक कैदखाने के रूप में पहचाना जा रहा है. फलतः बच्चे साहित्य की पुस्तकों की विराट दुनिया से परिचित ही नहीं हो पाते और पाठ्यपुस्तकों को ही सर्वोपरि मान केवल किताबी कीट बन कर रह जाते

है. यही कारण है कि बच्चे स्कूलों में खुश नहीं हैं. उनके चेहरों पर बाल सुलभ हँसी और उनके जीवन से चंचलता गायब है. वे पढ़ने के आनन्द से वंचित सदैव तनाव की चादर ओढ़े गुमसुम एक यंत्रमानव की भांति व्यवहार कर रहे हैं. क्योंकि पढ़ना न केवल विचार देता है, बल्कि दृष्टि और जारूकता भी देता है साथ ही पाठक को लगातार अद्यतन भी करता रहता है. इसीलिए कहा गया है कि कोई व्यक्ति नागरिक के रूप में संवैधानिक अधिकारों एवं कर्तव्यों का पालन भली-भांति तभी कर सकेगा जब वह पढ़ सकने में समर्थ होगा. पढ़ने का आशय केवल वाचन से नहीं है अपितु शब्दों के अर्थबोध के जुड़ने से है.

बच्चे अपने आसपास की दुनिया में देखे-सुने जाने वाले शब्दों से अपने मतलब के अर्थ तलाशने में कुशल होते हैं. पढ़ना किसी शब्द के अर्थ का विस्तृत प्रकटीकरण है, आनंद का उत्साह है परंतु दुर्भाग्य से स्कूली शिक्षा में बच्चों के आनंद की चाह की अनदेखी की जाती है.
स्कूल भूल रहे हैं कि हर बच्चा अलग और विशेष है. उसकी रुचियाँ, उसकी दृष्टि, उसकी कल्पना और उसका सौंदर्यबोध दूसरे से अलग है. शिक्षकों का बच्चों के प्रति पूर्वाग्रह, धारणा, व्यंग्य और उलाहना के तीर उसे अंदर तक वेध देते हैं. उसके अंदर नित प्रवाहित सृजन की रसवती धारा की- एक-एक बूँद निचोड़ कर उसे सूख जाने को विवश कर देते हैं. कक्षा का हिंसक माहौल उसे न केवल भयभीत करता है बल्कि नवल सृजन के कपाट भी बंद करता है. तब बच्चे न तो पढ़ने का आनंद प्राप्त कर पाते हैं और न ही ज्ञान का सृजन ही. रही सही कसर अभिभावकों के सपनों ने पूरी कर दी है. आज के सभी अभिभावकों के लिए बच्चों के पढ़ने का एकमात्र उद्देश्य परीक्षा में सर्वाधिक अंक लाकर एक अदद नौकरी प्राप्त करना रह गया है. इसलिए अभिभावकों का पूरा ध्यान, श्रम, समय बच्चों के अधिकाधिक अंक प्राप्त करने तक सीमित रह गया है, ताकि बच्चे कैरियर के अच्छे व्यावसायिक कोर्सेज में प्रवेश पा सकें. अंकों की यह दौड़ पाठ्यपुस्तकों से इतर साहित्य, कला, संगीत, पर्यावरण पर उपलब्ध पुस्तकें पढ़ने का बिल्कुल अवसर नहीं देती है. यदि कोई बच्चा पाठ्यपुस्तक से इतर कोई किताब पढ़ता दिख जाता है तो उसके अभिभावकों को वह समय खराब करना लगता है. फलतः

बच्चे न तो स्वयं को समझ पाते न ही बाहरी दुनिया को. वे एक रोबोट की भांति विकसित होते चले जाते हैं. उनमें न तो संवेदना होती न करुणा, ममता और न ही समाज के प्रति अपनापन और उत्तरदायित्व का बोध. सांचे में ढले हुए बच्चे अपने रूठे और नीरस व्यवहार से केवल अलगाव, अशांति, मनभेद, आक्रोश एवं कुंठा ही व्यक्त करते हैं. यहाँ मुझे पाउलो फ्रेरे का कथन याद आता है कि "जब मैं पढ़ता हूँ तब दुनिया को समझ रहा होता हूँ और जब दुनिया को समझ रहा होता हूँ तो खुद को भी समझ रहा होता हूँ."

पढ़ने की आदत का बीजारोपण -बचपन में ही कर देना श्रेयस्कर होता है. स्कूल और परिवार इस आदत को विकसित करने की दिशा में अपनी बड़ी भूमिका निभा सकते हैं. इसके लिए जरूरी है कि स्कूलों के पुस्तकालयों में कैद किताबों को अलमारियों से मुक्त कर बच्चों के हाथों तक पहुँचने दिया जाए. फटने एवं खोने के डर से स्कूल किताबों को बच्चों को दूर रखते हैं जो पढ़ना सीखने की दिशा में एक बड़े बाधक के रूप में उपस्थित होता है. कक्षा कक्ष में भी एक अलमारी में कुछ किताबें रखी जा सकती हैं. डोरियों में उन्हें लटकाया जा सकता है जिन्हें देखकर बच्चों में उन तक पहुँचने और छूने की ललक पैदा हो सके. पढ़ने की रुचि पैदा करने के लिए पुस्तकालय संचालन की जिम्मेदारी बच्चों की टोली को दी जा सकती है जो पुस्तकों के रखरखाव के साथ ही बच्चों को किताबें निर्गत और जमा कर सकें. इसके साथ ही बच्चों द्वारा पढ़ी जा रही पुस्तकों पर उनके बीच परिचर्चा हो सकती है. उनके अनुभव प्रार्थना स्थल में या अन्य किसी बड़े समूह में सुने जा सकते हैं. उनसे संक्षिप्त समीक्षाएँ लिखवाई जा सकती हैं और यदि स्कूल में दीवार पत्रिका पर काम किया जा रहा हो तो उनके अनुभवों को स्थान दिया जा सकता है. इससे बच्चों में पढ़ने की ललक, उत्साह तो पनपेगा ही साथ ही उत्तरदायित्व, सामूहिकता, सुनने एवं अभिव्यक्ति का कौशल भी विकसित होगा जो उन्हें एक बेहतर नागरिक के रूप में विकसित होने में मदद करेगा. परिवारों में प्रायः जन्मदिन एवं अन्य छोटे-मोटे उत्सव खूब मनाए जाते हैं जिनमें उपहार आदि भेंट किए जाते हैं. विचार करें कि क्या बच्चों को केक, मिठाई, खिलौने, कपड़ों के साथ ही उपहार में पुस्तकें नहीं दी जा सकतीं? घरों में

अखबार के साथ ही नियमित रूप से कोई पत्रिका मँगवाई जा सकती है. पुस्तक मेलों में बच्चों को लेकर जाया जा सकता है, जहाँ वे पुस्तकों की एक बड़ी दुनिया से रूबरू हो पढ़ने की संस्कृति का हिस्सा बन सकें. इस तरह धीरे-धीरे बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित होगी और वे पढ़ने को दैनिक जीवन का अंग बना सकेंगे.

इसके साथ ही सरकारों को भी चाहिए की ग्राम पंचायत स्तर पर लघु पुस्तकालय विकसित करने की दिशा में पहल करें. इसमें नव साक्षरों के साथ ही युवाओं, महिलाओं और प्रतियोगिता संबंधित साहित्य रखा जा सकता है जहाँ से सहजता के साथ ग्रामवासी पढ़ते हुए पढ़ने की संस्कृति में छाये संकट का समाधान खोज सकें.

[सम्प्रति: प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक बदलावों, आनन्ददायी शिक्षण एवं नवाचारी मुद्दों पर सतत् लेखन एवं प्रयोग. संस्थापक - 'शैक्षिक संवाद मंच' (शिक्षकों का राज्य स्तरीय रचनात्मक स्वैच्छिक मैत्री समूह). बांदा, उ0प्र0]

स्वच्छता का गाना

रचनाकार -सायन शर्मा कक्षा-7वीं शा.पू.मा.शाला, पंधी

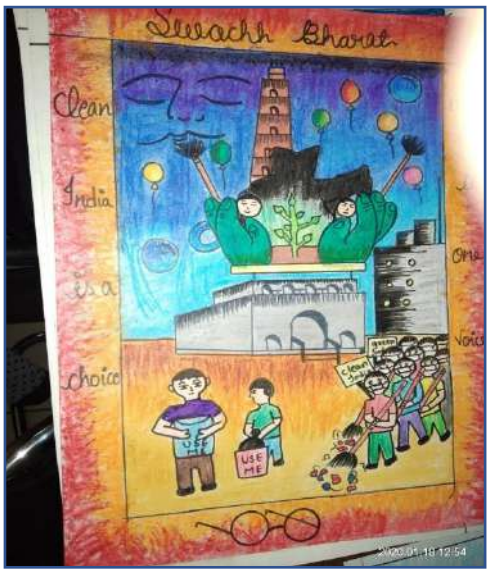

मन की सफाई जरूरी है,
तन की सफाई जरूरी है.
घर की सफाई से पहले,
गलियों की सफाई जरूरी है.
साफ सफाई वाले ही
जीवन का राज बताते,
धरती की सफाई से पहले
अंबर की सफाई जरूरी है.
साफ-सफाई रखना,
साफ सफाई वाले ने ही
मीठा फल चखना.
स्कूल की सफाई से पहले,
पुस्तकों की सफाई जरूरी है.
मन की सफाई जरूरी है.
तन की सफाई जरूरी है.

My Dream World

Author- Devika Sahu

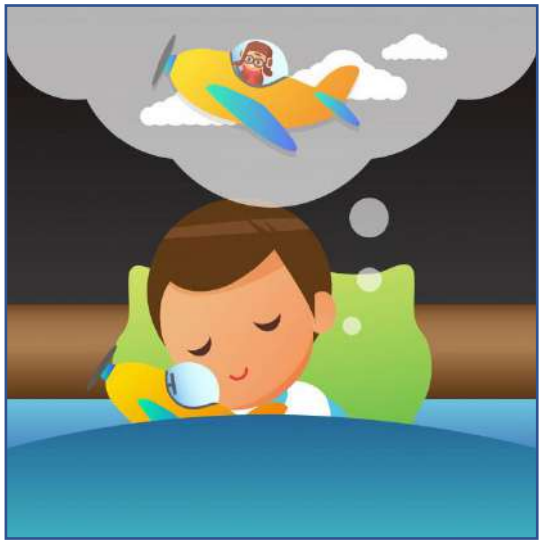

Where I can breathe freedom
Where I can stretch my arms
without being bound in chains
for being a girl
Where I can dance
To the rhythm of my soul
Without worrying about my shape
Or age
Where I can be with all my loved ones
Where I can cry whenever I want
In someone's arms
Where I can laugh out loud
And sing my chants
Where I can do
What my inner me wants
Where I can hold each and every hand
Where I can keep singing
In the name of Lord
Where in the name of religion
I'll not be forced
Where I can write
With the ink of my colours
Where I can enjoy
The bloom of true flowers
Where I don't have to pretend

Or play a role
Where I can set my own goal
Where I can chirp like a free bird
I dream of such a dream world
Across the real world

कटी पतंग

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

छात्राओं व्दारा कविता संग्रह

गपशप

रचनाकार - जाग्रति साहू कक्षा 8, नेवरा, छत्तीसगढ़

गपशप आई गपशप आई
खुशियों के दिन संग लायी
गपशप जब भी आती है
सबका मन बहलाती है
कभी दार्जिलिंग के पहाड़ों की सैर
हमें गपशप कराती है
ऐसे ही अलग अलग स्थानों के बारे में
हमें गपशप बताती है
गपशप आई गपशप आई
खुशियों के दिन संग लायी
गपशप जब भी आती है
सबका मन बहलाती है

प्यारी गपशप न्यारी गपशप

सबसे प्यारी लगती गपशप

आओ करें जल संरक्षण

रचनाकार - ईशा निषाद, कक्षा- 9 शासकीय उच्चतर, माध्यमिक विद्यालय

खौना, छत्तीसगढ़

देश में बढ़ रही है आबादी, जिससे बड़ी है पानी की बर्बादी .

पानी का तुम करो सदुपयोग, पीने लायक पानी का कम हो रहा है संयोग .

बरसात के पानी को भूमि तल तक तुम पहुचाओं ,

पेड़ों को कटने से भी बचाओ .

करो अब भविष्य की कल्पना तुम, पानी की बर्बादी न करना तुम.

पानी खरीद कर पी रहे हम सब आज, ये है प्रकृति माँ का हमको अभिशाप .

आओं हम सब जल बचायें, जल संरक्षण में हाथ बटायें .

हम बच्चों ने ये सोचा, पानी का महत्त्व सबको बतायेंगे.

पानी का सदुपयोग करना लोगो को बतलायेंगे, जल संरक्षण के महत्व का परचम हम लहरायेंगे

सावन

रचनाकार - लक्ष्मी साहू, कक्षा 8, शा. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ख़ौना, छत्तीसगढ़

सावन आया सावन आया,
चारों ओर हरियाली छाया.
टप टप टप बून्द पड़े हैं,
मह मह मह मिट्टी महके है.
सावन में नाचे हैं मोर,
खुशियों से झूमते हैं मोर.
झूमते नाचते पंख फैला के,
सभी लोगो का दिल बहलाते
जो लगाये पेड़ पौधे,
आये उसके घर खुशियां
आओ आओ लगाए पेड़,
पर्यावरण बचाये हम.

सावन आया सावन आया,
चारों तरफ हरियाली छाया.

बेटियां

रचनाकार - विद्या वर्मा, कक्षा- 8 , शा.उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ख़ौना

कमल के जैसे खिलती हैं बेटी,
सबसे मीठी - मीठी बातें करती हैं बेटी.
यह रखती हैं सबका मान,
यह करती हैं सबका सम्मान.
यह पढ़ लिख कर कुछ बन सकती हैं,
यह अपने सपनों को पा सकती हैं.
सब कुछ सहती हैं ,
फिर भी कुछ न कहती हैं.
कमल के जैसे खिलती हैं बेटी,
सबसे मीठी मीठी बातें करती हैं बेटी.

मेरी छोटी सी कहानी

रचनाकार - हीरा यदु ,कक्षा 8 वीं, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खौना, छत्तीसगढ़

मेरी छोटी सी गाँव है न्यारी, हम बच्चों में है नादानी
खेलते कूदते दोस्तों के संग स्कूल है हम जाते
पढ़-लिख के जो हम बच्चे टीचर बनना चाहते
टीचर, एस. एम. दीदी से जो शिक्षा मिलती
वही हम घर में आकर बतलाते
मम्मी पापा की बात मानकर, रोज स्कूल हम जाते
दोस्तों की सहायता करके, खुशियाँ हम सब पाते
जीवन कौशल सीख के, मस्त मगन हो जाते
गर्मी छुट्टी में खेलकूद के, गाँव घूम के आते

माहवारी जागरूकता अभियान

कुमारी भावना निषाद, कक्षा 9 वीं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
खौना छत्तीसगढ़

गर्मी की छुट्टी है आती, खाली समय साथ है लाती.
आओ आओ एक बात बताऊँ, लड़कियों की कहानी तुम्हे सुनाऊँ.
किशोरियों को होती है माहवारी, खून की कमी की डर है भारी.
हरी सब्जियाँ अंडा दाल, चावल फल दूध है सम्पूर्ण आहार.
पोषण की है इन्हें जरुरत, न मिले तो कमजोरी की मूरत.
हम यह काम करायेंगे, किशोरियों को माहवारी की बात बतायेंगे.
इसमें लेंगे आशा दीदी व ए. एन. एम. दीदी का साथ,
गाँव में चलाएंगे माहवारी हेतु जागरूकता अभियान .

जल है हमारा जीवन

रचनाकार -(कुसुम साहू , चंचल वर्मा , डिगेश्वरी धीवर)कक्षा 9, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खौना, छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ की है यह बात, आओ सुनायें सबको आज
पिछले साल पड़ा था सूखा, फसल हमारा मर गया भूखा
बादल ने दी हमको मात, बारिश न करके महाराज
न जाने क्यों बादल रूठा, पेड़ों की कमी से पड़ गया सूखा
लोग हो गये हैं परेशान, जल की कमी पड़ी है आज
क्या करें यह लोचा है.....?

हम बच्चों ने यह सोचा हैं
जल कमी मिटायेंगे

लोगो को जल संरक्षण का पाठ पढ़ायेंगे

हरी धरती

रचनाकार - योगेश्वरी धीवर, कक्षा 7 वीं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रायखेड़ा, छत्तीसगढ़

हरी भरी धरती न्यारी, लगती जो केसर की क्यारी
खेत में गेहूं के बाल, चम - चम करते धान के बाल
अरहर की बाजी पैजनियाँ, हंसती खुली मटर की मुनियाँ
सरसों नाचे फूली - फूली, शर्मा जाती गाजर - ली
खेत हो गये रंग बिरंगे, जैसे उड़ते कई पतंगें
यह है मेरी धरती माता, इससे है सारा जीवन न्यारा

हर एक कदम में स्वच्छता

रचनाकार - यामिनी ध्रुव, कक्षा 7 वीं, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रायखेड़ा, छत्तीसगढ़

आओ हम दुनिया को स्वच्छ बनायें, घर घर में शौचालय बनवायें
स्वच्छता का हम रखें ध्यान, तभी बनेगा देश महान
अस्वच्छता का हम नाश करें, स्वच्छता पर हम नाज करें
कूड़ा करकट न फैलाएं, गावं शहर को स्वच्छ बनायें
साफ सफाई हो जहाँ, मन ललचाता है जाने को वहां
आओ हम दुनिया को स्वच्छ बनाये, घर घर में शौचालय बनायें
साथ साथ इसे उपयोग में लायें

सड़कों की सफाई

रचनाकार - नेहा वर्मा, यमुना निषाद, मनोज वर्मा - कक्षा 7 वीं, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रायखेड़ा, छत्तीसगढ़

आओ सड़कों को साफ करें, सड़कों को गन्दा न करें
सड़कों से चलकर स्कूल आते, सडक से चलकर घर हम जाते
सड़क किनारे पेड़ लगायें, सड़कों को फूलों से सजायें
सड़क होती है लम्बी चौड़ी, दिखने में लगती साफ सुनहरी
सड़क साफ हो जहाँ, लोग चलना पसंद करते हैं वहाँ
चलो दोस्तों एक कदम उठायें, सड़कों को साफ कर स्वच्छ बनायें

लड़की लड़का एक समान

रचनाकार - प्रीति धीवर , आरती निषाद - कक्षा 7 वीं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रायखेड़ा, छत्तीसगढ़

लड़की लड़का को हम समानता का अधिकार दिलायें

समाज में असमानताओं को दूर भगायें

लड़की लड़का दोस्त हैं प्यारे, भाई बहन के रिश्ता हैं न्यारे

हर लड़की लड़का को पुलिस बनायें, अधिकारों की रक्षा को जो याद दिलायें

हर लड़की लड़का को दे हम ज्ञान, तभी बनेगा भारत महान

लड़की लड़का शिक्षित हो जहाँ, सभ्य समाज बनता है वहाँ

चलो दोस्तों एक कदम उठायें, सबको समानता का अधिकार दिलायें

जागो माँ

रचनाकार - पार्वती ध्रुव, कक्षा 9 वी, शा.कन्या उच्च. मा. वि. मगरलोड

जागो माँ जागो माँ जागो माँ
कैसी है दुनिया तेरी ये माँ
बेटी न चाहे कोई यहाँ
कैसी है दुनिया तेरी ये माँ
बेटी न चाहे कोई यहाँ

जागो माँ जागो माँ जागो माँ
कोख के गुड़िया बोले हे माँ
बेटी न चाहे कोई यहाँ

जागो माँ जागो माँ जागो माँ
मैं नहीं मरना चाहती हूँ माँ
बेटी न चाहे कोई यहाँ

जागो माँ जागो माँ जागो माँ
मैं पढ़ना चाहती हूँ स्कूल में माँ
ये सब चाहे बेटी यहाँ
मैं पढ़ना चाहती हूँ स्कूल में माँ
ये सब चाहे बेटी यहाँ

जागो माँ जागो माँ जागो माँ
क्यों नहीं चाहती दुनिया बेटी हे माँ
रो-रो कर पूछे ये बेटी यहाँ
क्यों नहीं चाहती दुनिया बेटी हे माँ
रो-रो कर पुछे ये बेटी यहाँ
कोख के गुड़िया बोले हे माँ
बेटी न चाहे कोई यहाँ
जागो माँ जागो माँ जागो माँ

बेटी है कीमती

रचनाकार - मेनका सतनामी कक्षा -9 वी , शा.कन्या उच्च. मा. वि. मगरलोड

बेटी के जन्म पर बहनों आंसू कभी बहाना न
बेटी तो हीरा मोती है
उसे कभी ठुकराना न
धन पराया बेशक बेटी
खून तो अपना होती है
जिसके घर में बेटी जन्मे धन की वर्षा होती है
बेटी बचाओ बेटी पढाओ
अपने दिल पे लिख डालो
कन्या हत्या के कलंक को माथे से धो डालो
कन्या भी तो पूज्यनीय है
उसका वध क्यों करते हो
बेटी की हत्या करवाकर
पुत्र रत्न जो पायेगा

ऐसा बेटा उस माता को
कभी न सुख दे पायेगा
आओ बहनों करें प्रतिज्ञा
ऐसे पाप से बचना हैं
ममता को न दाग लगाएँ
कान खोल के सुनना हैं

मैं पढ़ना चाहती हूँ

रचनाकार - पूर्णिमा कोपरकर ग्रेड -7th स्कूल -पी.जी. उमाठे शा. उ. मा. कन्या विद्यालय, शांति नगर, रायपुर

मैं पढ़ना चाहती हूँ, मैं पढ़ना चाहती हूँ
गर्मी की छुट्टी में कुछ करना चाहती हूँ

मैं दुनिया को कुछ दिखाना चाहती हूँ
मैं दुनिया को स्वच्छ रखना चाहती हूँ
मैं संसार को खुश देखना चाहती हूँ
मैं संसार को सुन्दर, खिलखिलाता देखना चाहती हूँ
मैं पढ़ना चाहती हूँ, मैं पढ़ना चाहती हूँ
आस पास के लोगों को बताना चाहती हूँ
कि हरे भरे पेड़ - पौधे लगायेंगे और कूड़ा कूड़ेदान में डालेंगे
पृथ्वी को हरा भरा रखेंगे
मैं पढ़ना चाहती हूँ, मैं पढ़ना चाहती हूँ
मैं कुछ करना चाहती हूँ

पहेलियाँ

रचनाकार - टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला

साल में आए एक बार
पौष माह का त्योहार
तिल के लड्डू खूब खाएँ
नाचें गाएँ मजा उड़ाएँ

लकड़ी का एक तख्ता चौकोर
जिसमें खेल होता है इनडोर
खेल सकते हैं चार खिलाड़ी
पंकज नमन कमल किशोर

लालू जोशू रानी मनु
ऐ खुशी ओमी रिया पिया
कौन व्यक्ति हैं जिन्होंने
रेडियो का अविष्कार किया

एक पेड़ का अंग्रेजी नाम
वह है हथेली मेरी
खुशी ओमी एकता रानी
अरे बूझ पहेली मेरी

भक्त उन्हें पूजते हैं
पर वे कोई भगवान नहीं
एक कुशल खिलाड़ी तो हैं ही
इसमें कोई हैरान नहीं

उत्तर:- 1. मकर सक्रांति का पर्व 2 . कैरमबोर्ड का खेल 3 . मि. जी. मार्कोनी 4. पाम ट्री 5. भारतरत्न सचिन तेंदुलकर

गुण की पहचान

लेखक -दिलकेश मधुकर

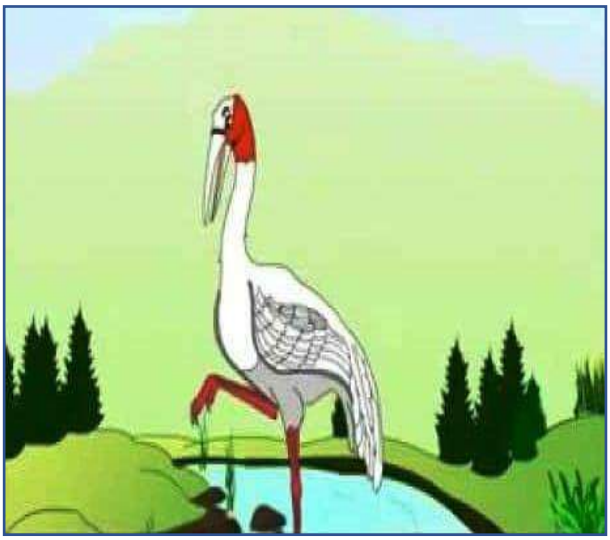

वन में दो पक्षी, दिख रहे थे एक समान.
कौन हंस है कौन बगुला, कौन करे पहचान.

बगुला बड़ा था घमंडी, कहता मेरे गुण महान.
तेज उड़ सकता हूं तुझसे, कह रहा था सीना तान.

झगड़ा सुनकर कौवा आया, श्रेष्ठता के लिए करो उड़ान.
नम्र भाव से होकर हंस तैयार, उड़ चला दूर आसमान.

थक गया जब बगुला, बदली अपनी टेढ़ी चाल.
नाटक किया कमजोरी का, पहना था वह शेर की खाल.

दोनों पहुंचे मोर के पास, लेकर न्याय की आस.
गजब तरीका सुझाया उसने, पता चलेगा उनकी खास.

मंगवाया पानी मिला दूध मोर ने, रख दी सामने दो कटोरी.
बगुला पी गया पूरा दूध-पानी, हंस दूध पीकर पानी को छोड़ा.

शर्मिंदा हुआ बगुला, माफी मांग किया नमस्कार.
हो गयी पहचान सत्य की, सदा होती है जय जय कार.

चाय पिलाई जाए

रचनाकार -भूमिका राय

इलाइची की महक ओढ़े
अदरक का श्रृंगार कर सजी

केतली की दहलीज से निकलकर
प्याली की डोली में बैठी

इस भागते हुए वक्त पर
कैसे लगाम लगाई जाए

ऐ वक्त आ बैठ, तुझे
एक कप चाय पिलाई जाए

नवाचार - सामाजिक संगठन 'संचय' अब करेगा संचय - शिक्षक व छात्रों ने लिया संकल्प

आलेख एवं चित्र - अनुराग तिवारी, रामसरकार पांडे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,कुटरा

अब वास्तव में हमारा देश बदल रहा है. वह इसलिये,क्योंकि बच्चों में भी समाज सेवा की भावना घर कर रही है. यह संभव हुआ एक शिक्षक की प्रेरणा से ग्राम कुटरा के पण्डित राम सरकार पांडेय शा. उ. मा. विद्यालय के शिक्षक श्री अनुराग तिवारी ने छात्रों के सामने जब समाज सेवा करने की बात कही तो सभी छात्रों ने मिलकर एक सामाजिक संगठन 'संचय' का गठन किया व संकल्प लिया कि प्रथम चरण में किसी भी गरीब परिवार में शोक संतप्त परिवार को 50 किलो चावल तत्काल दिया जाएगा. ग्राम कुटरा में इस अनूठी पहल के लिये सभी ग्राम जन शिक्षक व छात्रों की तारीफ करते नहीं थक रहे हैं. उनका मानना है कि बच्चों में ये भाव अभी से हमारे शिक्षक जब जगा रहे हैं तो आगे चलकर निश्चय ही यह विद्यालय समाज सेवा के मामले में देश में अग्रणी स्थान प्राप्त करेगा. उन्होंने विद्यालय के शिक्षक श्री अनुराग तिवारी को धन्यवाद दिया, जिनके अथक प्रयासों ने बच्चों को समाज सेवा से जोड़ा.

Said the Shower

Poet- Tikeshwar Singh Gabdiwala

O children ! come on,
Said the shower.
Let me tell you,
My immense power.
Water is falling down,
And looking so bright.
Singing and dancing,
Day and night.
Take the joy with,
My water cold.
Play with me quick,
Ajii ! to be bold.
Then keep playing on,
Flute and drum.
Tarah-rum pum-pum,
Tarah-rum pum-pum.

The Ant and the Fly

Contributor - Sunila Franklin

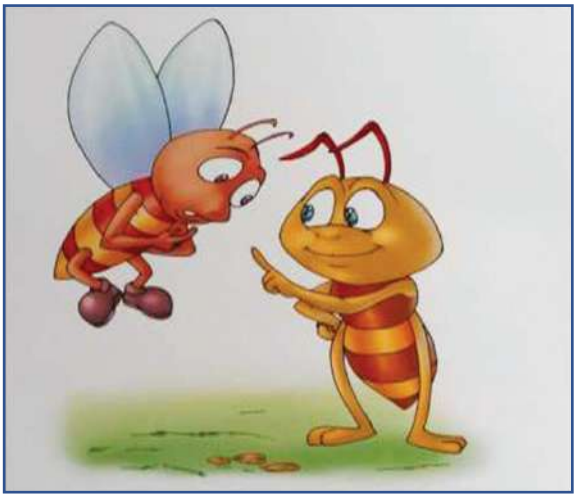

Once, an Ant and a Fly were fighting over who was more important.

The Fly said, “Ant! What do you think you are? How can you even think about comparing yourself to me? Look at me! You must work hard but I pass my time with the rich and the learned. I fly into the temples and taste the offerings. I can sit on the King’s crown and kiss the Queen’s forehead. I do not work yet have the best life!”

The Ant replied, “Don’t be so proud! You are always hated when you enter the temples. You are driven away as soon as you sit on the King’s crown or the Queen’s forehead. You do not have anything left for the difficult times as you are lazy. In winters, you feed yourself on a pile of cow dung. Look at me! I work hard and gather a store of grain for the winter. Later, when you shiver in the cold, I am safe and at peace in my cosy home. I am prepared to live in any season of the year.

Look at your own faults, before finding faults in others.

Don't leave me alone

Author- Devika Sahu

How will I live hereafter?
Don't leave me alone.
Just share my life left half and half,
Please don't leave me alone.
You can't be so selfish ,
To leave me crying.
And be free from all burdens of this world!
Just be with me for some more time ,
don't leave me alone.
I am so weak to bear the departure,
My tears won't be enough to wash my pain,
Don't kill my soul ,
Don't leave me alone.
My childhood memories are all with you ,
My only hope to be able to live among the demons.
Please don't leave me alone.
I won't be fully happy ever if you leave ,
No matter whatever I achieve.

A corner of my heart will always ache,
My heart won't bounce in bliss and folly,
My body will be alive but I'll never live to the fullest father;
I will have no arms to hold in fear,
No hands to wipe away my tears.
No one will stand by my side,
No shade to in my hardships to hide.
Please tell me how will I spend my life if you are gone?
Oh ! my father please don't leave me alone.
Don't leave me alone

तीन मित्र

लेखक -दीपक कंवर

घने जंगल के बीच एक तालाब था. उसके आसपास कछुआ, खरगोश और हिरण तीन मित्र रहते थे. तीनों अपना जीवन हंसी खुशी व्यतीत कर रहे थे.

कुछ दिन बाद एक शिकारी उस जंगल में आने लगा. वह आए दिन जंगल के छोटे-छोटे पशु पक्षियों को शिकार कर ले जाता था. तीनों मित्रों को भी अब चिंता होने लगी. एक दिन तीनों मित्र तालाब के किनारे बैठकर इस पर चर्चा कर रहे थे कि कैसे इस शिकारी से बचा जाए.

तीनों ने सलाह मशविरा कर एक योजना बनाई. अगले कुछ दिन बाद शिकारी जंगल आया तभी उसको एक हिरण दिखाई दिया. वह हिरण का पीछा करने लगा. हिरण भागते-भागते तालाब के पास आकर झुरमुट के बीच जाकर छुप गया . उसका कहीं अता-पता न चला. शिकारी थका मांदा तालाब के किनारे पेड़ पर के नीचे आराम करने लगा. आराम करते हुए उसने पानी पीने के लिए तालाब की ओर नजर दौड़ाया, उसे एक खरगोश पानी में डूबता हुआ नजर आया.

शिकारी ने सोचा चलो आज डूबते खरगोश को पकड़ कर ले जाता हूँ. तालाब के किनारे आकर खरगोश को पकड़ने गया पर खरगोश उसके पहुंच से दूर था. वह तालाब के थोड़ा और अंदर आया . खरगोश कछुआ के पीठ पर बैठा था. जैसे ही शिकारी पकड़ने के लिए आगे आता खरगोश को इशारा कर आगे बढ़ा देता था. इस तरह धीरे-धीरे खरगोश और कछुआ दोनों शिकारी को दलदल तक ले आए और वह शिकारी उसमें फंस कर डूब गया. इस तरह तीनों मित्रों ने जंगल से इस शिकारी के आतंक को दूर किया. अब सभी पशु पक्षी हंसी-खुशी जिंदगी बिताने लगे.

किसनहा

रचनाकार -संतोष कुमार साहू - प्रकृति

मय छत्तीसगढ़ के किसनहा आंव, मय छत्तीसगढ़ के किसनहा
नांगर तुतारी मोर संगवारी , मय कामबुता मा अगवा आंव

1

रापा कुदारी धरके मय ह , खेत मा जाथंव बिहनिया
लहु बोहाके अन उपजाथंव , खेत म सरी मंझनिया
पथरा के छाती ल चीर के मेहा, सोने फर उपजैय्या आंव

२

भुंईया के कोरा मोर बिछौना , बादर के ओडहैय्या आंव
नुन चटनी बासी संग मा, पेठ के बरहा खवैय्या आंव
धान के बारी मोर कलगी हे, चिरहा ओनहा ओडहैय्या आंव

३

उडत- बुडत ले मय ह कमाथव, भुंईया के पियास बुझैय्या आंव
जम्मो झन बर पेज पसिया के, जुगत मय ह भिडैय्या आंव
गद- गद होथे मोरे मने ह, छत्तीसगढ़िया कहवैय्या आंव

४

मोर पीरा ला कोन ह जाने, सब के पीरा हरैय्या आंव
मया पिरीत के गठरी ल धरके , सब बर हिरदय खोलैय्या आंव
मीठ बोली कोनो बोले त , ओखर बर परान गवैय्या आंव

खेलगीत

रचनाकार - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

खेलकूद एक विद्या ए विद्या ए वरदान .
विभाग आदिम जाति कल्याण.....

बालोद जिला डौण्डी ब्लॉक,
ग्राम घोटिया संजय पारा.
चारों-मुँड़ा पहार-परवत,
रुखराई हरिहर डारा.
चिरई-चिरगुन के चींव-चाँव ले,
सुग्घर सोनहा बिहान.

विभाग आदिम जाति कल्याण.....
खो कबड्डी गोला फेंक,

खुरसी-दऊँड़ होवत हे.
सूजी-धागा बोरा-दऊँड़,
गोली-चम्मच चलत हे.
लइका-सियान बड़ खुश हें,
सइमो-सइमो मैदान.
विभाग जाति कल्याण.....

गाँव ब्लॉक जिला ला,
खेल मं अलख जगाना हे.
खेलकूद के प्रतिभा ले,
छत्तीसगढ़ ला सजाना हे.
मया-पिरीत बिखरे इहाँ,
नई हें कोनों अपन-बिरान.
विभाग आदिम जाति कल्याण.....

खेलकूद एक विद्या ए विद्या ए वरदान .
विभाग आदिम जाति कल्याण..

चूहा बोला

रचनाकार - द्रोण साहू

चूहा बोला,
ओ सुआ !
मुझको तुमने
क्यों छुआ?
सुआ बोला,
ओ चूहा !
छू लिया तो,
क्या हुआ ?
आ खाएँगे,
मिलकर दोनों,
मालपुआ

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

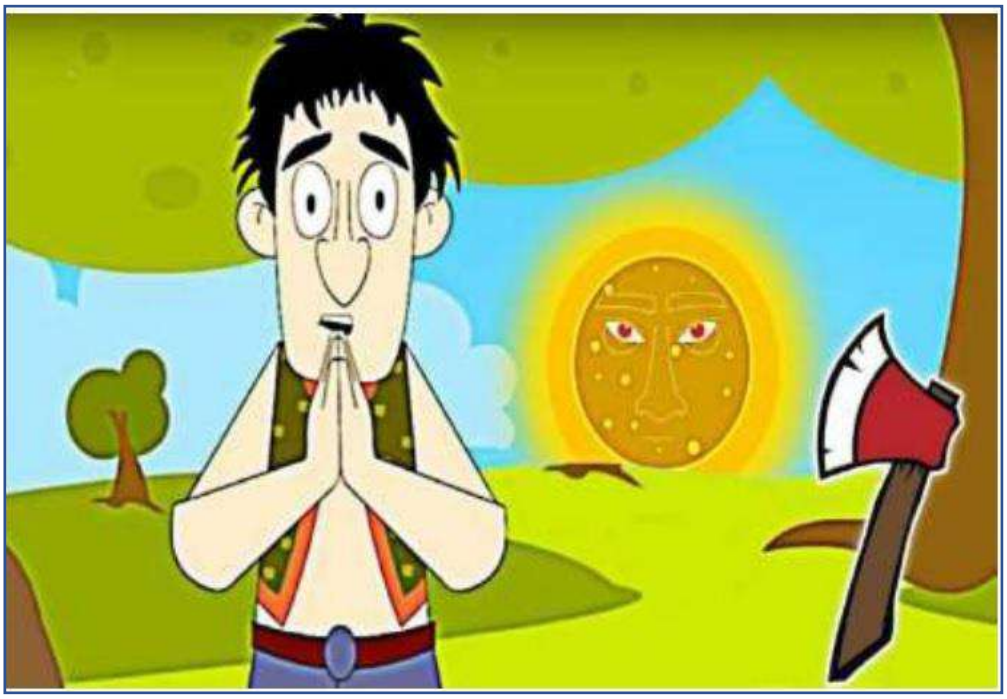

इस चित्र पर हमें कहानियाँ प्राप्त हुई हैं, जो हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं -

श्रम ही पूजा

लेखक -टेकराम ध्रुव दिनेश

एक लकड़हारा था, नाम था - रामू. प्रतिदिन जंगल में लकड़ी काटने जाया करता था. दिन, हफ्ते, महीने, और साल गुजर गए, लेकिन रामू लकड़हारे की दिनचर्या नहीं बदली. वह रोज सूर्य उदय होने के पहले उठता, सूर्य को नमस्कार करता और भोजन ग्रहण कर के अपनी कुल्हाड़ी लेकर जंगल की ओर चल देता. दोपहर तक परिश्रम कर लकड़ियां काटकर एकत्र करता और बाजार की ओर चल देता बेचने के लिए. लकड़ियाँ बेचकर जो पैसे मिलते उससे अपनी जरूरत की चीजें खरीद लेता.

उसके गाँव के लोग सालों से उसकी यह दिनचर्या देखते आ रहे थे. उनमें से कई लोग तो सबेरे देर से उठते, काम पर भी देर से जाते. कई तो ऐसे भी थे जो

सुबह से शाम तक पूजा-पाठ में ही लगे रहते और सोचते रहते कि अब तो भगवान ही हमारा मालिक है. लेकिन रामू इन सबसे दूर अपनी मेहनत की दुनिया में रमा रहता था.

एक दिन गाँव में एक महात्मा आए. उनका सम्मान करने के लिए गाँव के सारे लोग शाम को एक जगह एकत्र हुए. केवल रामू लकड़हारा वहाँ नहीं था. सारे लोग काना-फूसी करने लगे. महात्मा जी के पूछने पर कि क्या काना-फूसी हो रही है? लोग रामू के बारे में महात्मा जी से शिकायत भरी बातें बताने लगे. वे कहने लगे रामू बड़ा घमंडी है. देखिए आज भी यहां नहीं आया. महात्मा जी लोगों की बात ध्यान से सुनने के बाद बोले, कोई मुझे उनके पास ले जा सकता है क्या? सभी लोग महात्मा जी के साथ रामू के घर गए. सभी लोग अवाक् देखते रह गए जब महात्मा जी ने रामू लकड़हारे को प्रणाम किया और बोले - भाई, असली इंसान तो तुम्हीं हो जो श्रम को ही पूजा मानकर इतनी तन्मयता के साथ पालन करते आ रहे हो. महात्मा जी की बातें सुनकर लोगों के सर झुक गए.

शिक्षा - इस कहानी से यह सीख मिलती है कि हम कोई भी काम करें उसे बड़ी तन्मयता और ईमानदारी से करें.

लकड़हारे की कर्तव्यनिष्ठा

(लेखक - इंद्रभान सिंह कंवर)

किसी जंगल के किनारे एक लकड़हारा रहता था, जो बहुत ही ईमानदार एवं कर्तव्यनिष्ठ था. वह प्रतिदिन जंगल से सूखी लकड़ी लेकर आता और उसे गाँव में बेचकर अपना परिवार चलाता. इस तरह उसका और उसके परिवार का जीवन यापन होता था. उसे अपने कर्तव्य और अपनी कुल्हाड़ी से बहुत प्रेम था. गाँव के अन्य लोग उसकी कर्तव्यनिष्ठा को देखकर, उसे शहर में अन्य कार्य करने की सलाह देते, परंतु उसे तो अपनी कुल्हाड़ी और लकड़ी काटने से ही प्यार था.

हर दिन की भति वह उस दिन भी लकड़ी काटने के लिए जंगल गया हुआ था. लकड़ी काटते-काटते काफी समय हो चुका था. उसकी कुल्हाड़ी हाथ से छिटक कर कहीं दूर चली गई और वह परेशान होकर उसे ढूंढने लगा. काफी ढूंढने के बाद भी उसे उसकी कुल्हाड़ी नहीं मिली. शाम हो रही थी. अब तो सूर्य देव के जाने का समय भी हो चुका था.

लकड़हारा काफी परेशान हो चुका था परंतु वह पूर्ण विश्वास के साथ ढूंढने में लगा हुआ था. यह सब सूर्य भगवान जी देख रहे थे. वे मानव का रूप धारण कर उसके पास आए और पूछे, क्या हुआ भाई, शाम होने को है और तुम घर जाने की तैयारी नहीं कर रहे हो. बहुत परेशान लग रहे हो. तब लकड़हारे ने उन्हें पूरा वृतांत सुनाया. सूर्यदेव बोले - एक कुल्हाड़ी के लिए तुम इतना परेशान क्यों हो? नई कुल्हाड़ी ले लेना, छोड़ो इस कुल्हाड़ी को.

यह सब सुनकर लकड़हारे ने कहा, यह कुल्हाड़ी नहीं मेरा जीवन है. इसी से मेरा और मेरे परिवार का पालन पोषण होता है. मैं इसे ऐसे ही नहीं छोड़ सकता. अपनी कुल्हाड़ी के प्रति लकड़हारे का प्यार देखकर सूर्यदेव बहुत प्रसन्न हुए और अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट हुए. उन्होंने लकड़हारे की कुल्हाड़ी ढूंढकर उसे वापस कर दी. लकड़हारा सूर्य देव का दर्शन पाकर बहुत आनंदित हुआ. सूर्यदेव ने उसकी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से प्रसन्न होकर उसे सदैव सुखी रहने का आशीर्वाद दिया.

सीख - हमें अपने कार्य एवं कार्य में उपयोग की जाने वाली सामग्रियों के प्रति वफादार होना चाहिए क्योंकि इसी से हमारी रोजी-रोटी चलती है.

पेड़ को न काटो

लेखक -डिजेन्द्र कुर्रे

एक छोटे से गाँव की कहानी है. वहाँ चारों तरफ हरियाली ही हरियाली थी. चिड़ियों की चहचहाहट और पशु पक्षियों की आवाज़ें सबका मन आकर्षित करतीं थीं, लोगों का दिल जीत लेती थीं. वहाँ के लोग प्रातःकाल सूर्य का दर्शन करते तथा नियमित योग व्यायाम आदि करते थे. गाँव का नज़ारा देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते थे. वहाँ का तालाब स्वीमिंग पूल से कम नहीं था. चारों तरफ सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाता था. फूलों की बागवानी, आकर्षित करते मनमोहक दृश्यों का नज़ारा गाँव में था. उस गाँव में वर्षा भी खूब होती थी. पानी की कोई कमी नहीं थी. हवा शुध्द होने के कारण लोग बीमार नहीं पड़ते थे.

उस गाँव में एक बढ़ाई रहता था. वह रोज पेड़ काटता और लकड़ियों से फर्नीचर तथा आर्ट की विभिन्न कलाकृतियाँ बनाकर शहर भेजता. इसमें टेबल, कुर्सी, बक्सा, चौखट, दीवान, डायनिंग टेबल, आलमारी, मेज, दरवाज़ा, पलँग, आदि कई तरह के सामान शामिल थे. दिनों दिन उसकी तरक्की होती गई परंतु गाँव में पर्यावरण संतुलन धीरे-धीरे बिगड़ता गया. हरियाली धीरे-धीरे वीरान हो गयी. वर्षा में कमी हो गयी. तालाब सूखने लगे. फूलों के बाग मुरझाने लगे. गाँव पहले पर्यटन का केंद्र था पर धीरे धीरे लोगों ने इस गाँव में आना छोड़ दिया. गाँव की स्थिति बहुत खराब हो गई. लोग बीमार भी पड़ने लगे.

इस कहानी से हमें सीख लेनी चाहिए कि पेड़ों को न काटें. हरियाली लाने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगायें ताकि हमारा जीवन सुखमय बना रहे.
"पेड़ खूब लगाना है, जीवन में खुशियाँ लाना है."

लोभी लकड़हारा

लेखक -संतोष कौशिक

बरसों पहले किसी गाँव में, एक लकड़हारा था रहता.
नाम था रामू बेच के लकड़ी, जीवन यापन था करता ..
रोज की तरह लकड़ी काटने निकल पड़ा जंगल में.
ईश्वर को प्रणाम कर, लग गया लकड़ी काटने में..
काटते-काटते आ गई उसको गहरी सी थकान.
उसी पेड़ की छाया में फिर, उसे मिला विश्राम ..
मन में लालच का भाव जगा, सोची एक तरकीब.
पूरा जंगल काट अगर लूँ , बदले मेरा नसीब..
कटे रोज लकड़ी काटने का यह जंजाल.
बेचकर लकड़ी हो जाऊँगा मालामाल ..
जो पैसा आएगा, उसे बैंक में जमा करूँगा .
मूलधन तो पास ही रहेगा, ब्याज से खर्चा चलाऊँगा ..
लोभी रामू गाँव से, कई मजदूर बुलाया.
काटे सारे पेड़, जंगल का किया सफाया.
काटकर लकड़ी रामू ,बेचने ले गया शहर.
बैग भर रुपए मिले, खुश हो चल पड़ा घर..
रास्ते में बैठे-बैठे, ताक रहा था चोर.
बैग लूटा धक्का मारा, रामू ने मचाया शोर..
वहाँ सहायता के लिए, कोई नहीं आया.
रामू रो-रो कर अपने, किए पर बहुत पछताया..
कट गया जंगल हुई न वर्षा , पड़ गया अकाल.
गाँव वालों ने रामू के लिए बैठाया फिर चौपाल..
चौपाल में निर्णय हुआ, रामू का धन जप्त करेंगे.
उसे बेचकर पेड़ों की, पूरी भरपाई करेंगे..
गाँव वाले मिलकर, फिर से पेड़ लगाए.

आबाद हुआ फिर जंगल, सब मन में हर्षाए..
मिलकर सब ने एक दूजे को, फिर से शपथ दिलाई.
हरा भरा हो जंगल अपना, हो ना कभी कटाई ..
शिक्षा--- रामू की तरह लोभ नहीं करना बच्चे.
पढ़ लिख कर इंसान बनना सच्चे..

अब नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें वाट्सएप व्दारा 7000727568 पर अथवा ई-मेल से dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

चित्र कविता

प्रेषक - विभा सोनी शिक्षिका

कविता

आलू बोला मुझको खा लो,
मैं तुमको मोटा कर दूँगा
पालक बोली मुझको खा लो,
मैं तुमको ताकत दे दूँगी।

साथ में मूली, गाजर बोले,
अगर हमें भी खाओगे,
तो खूब बड़े हो जाओगे -
तो खूब बड़े हो जाओगे।

मार्गदर्शिका
श्रीमती विभा सोनी
शिक्षिका
शा. उ. मा. शाला जॉंजी बिलासपुर

छात्रा का नाम
कु. प्रॉंजली कुर्रे
आठवीं
शा. उ. मा. शाला जॉंजी

नवाचार - रचनात्मकता

प्रस्तुतकर्ता एवं चित्र - विरेन्द्र कुमार चौधरी शासकीय प्राथमिक शाला
तिलाईदादर संकुल केंद्र चनाट विकास खण्ड बसना जिला महासमुंद (छग)

काली कोयल

काली काली कोयल है, पर कितनी मीठी बोली है।
इसने ही तो कूकू-कूकू, आमों में मिश्री घोली है।
यही आम जो अभी लगे हैं, खट्टे-खट्टे हरे हरे।
कोयल कूकेंगे हो जाएंगे, पीले-पीले रस भरे-भरे।
हमें देखकर टपक पड़ेंगे, हम खुश होकर खाएंगे।
ऊपर गायेगी कोयल, हम नीचे उसे बुलाएंगे।
कोयल कोयल सच बतलाओ, क्या संदेशा लाई हो।
बहुत दिनों के बाद आज फिर, इस डाली पर आई हो।
क्या गाती हो किसे बुलाती हो, कह दो कोयल रानी।
प्यासी धरती देख मांगती हो, क्या मेघों से पानी।
अथवा कड़ी धूप में हमको, दुखी देख घबराती हो।
शीतल छाया भेजो यह, बादल से कहने जाती हो।

संग्रहकर्ता
कु.कुंती भोई
कक्षा - 4थी

दिनांक - 30/12/2019
शाला - शा.प्रा.शाला तिलाईदादर

मैं अपने विद्यालय में लेखन कौशल के विकास हेतु कहानी, कविता, ज्ञान की बाते लिखकर लाने का गृह कार्य देता हूँ. जो अच्छे सारगर्भित या प्रेरणा स्रोत होता है मै उसे टाइपिंग करा कर A4 साइज में प्रिंट निकलवाता हूँ और उस प्रिंट में उस बच्चे का फोटो सहित परिचय का भी उल्लेख करता हूँ तथा उसको कार्ड बनाने के लिए उसे लिमिनेशन करवा देता हूँ. इस प्रकार कहानी संग्रह कर रहा हूँ.

कहानी कविता इस प्रकार हो कि वह किसी पुस्तक से नही हो ऐसा होना चाहिए कि वह अपने दादा-दादी, माता-पिता, नाना-नानी या और किसी व्यक्ति से सुनी हो.

शाला के अनसुलझे पहलू

नवाचारी शिक्षक -श्री मोतीराम साहू (शिक्षक) शा.प्रा.शा.-खैरडोंगरी ,संकुल - दुल्लापुर, वि.ख.-पंडरिया ,जिला-कबीरधाम(छ.ग.)

नवाचार संक्षिप्त परिचय - विद्यालय में छात्रों का केवल बौद्धिक विकास करना ही पर्याप्त नहीं है । कई ऐसे भी क्षेत्र होते हैं, जहाँ शिक्षकों का ध्यान नहीं जा पाता है, और उस समस्या का समाधान नहीं हो पाता है । प्रायः यह देखा जाता है कि बच्चों की अपनी समस्या या विद्यालय से संबंधित किसी समस्या या कुछ सुझाव को संकोचवश शिक्षकों को नहीं बता पाते । इस समस्या के समाधान के लिए "शाला के अनसुलझे पहलू" एक अच्छी और कारगर गतिविधि है । इस गतिविधि के माध्यम से हम बच्चों की व्यक्तिगत समस्या या किसी भी विषय पर उनके सुझाव प्राप्त कर सकते हैं ।इससे विद्यालय की शिक्षा एवं व्यवस्था में आवश्यक सुधार किया जा सकता है ।

विद्यालय/कक्षा में प्रयोग - यह गतिविधि बच्चों में चिंतन करने की क्षमता का विकास करती है और किसी समस्या के समाधान करने की क्षमता का विकास करती है। यह नवाचार सभी कक्षाओं के लिए लाभदायक है।

कार्यविधि - "शाला के अनसुलझे पहलू " के लिए सबसे पहले एक बॉक्स की आवश्यकता होती है। बॉक्स बनाने के लिए गत्ते (पुट्ठा)के डिब्बे का इस्तेमाल किया जाता है उसके ऊपर पेपर में "शाला के अनसुलझे पहलू" लिखकर चिपका दिया जाता है और उस बॉक्स को सुविधानुसार एक स्थान पर रख दिया जाता है।

क्रियान्वयन - (1) विद्यालय के सभी बच्चों को एक कक्षा में बैठाकर उस बॉक्स और शाला के अनसुलझे पहलू के बारे में विस्तार से बताया जाता है।

(2) सबसे पहले बच्चे अपनी समस्या, विद्यालय की समस्या या कुछ सुझाव एक पर्ची पर लिखकर उसमें डाल देते हैं। इस बॉक्स को निश्चित अंतराल पर स्कूल में चौपाल लगाकर खोला जाता है ।

(3) शिक्षक के द्वारा सभी छात्रों के सामने उनकी पर्ची को खोलकर पढ़ा जाता है।

(4) छात्रों को "शाला के अनसुलझे पहलू" में इस तरह की समस्या या सुझाव डालने के लिए प्रेरित किया जाता है।

(5) शिक्षकों के द्वारा उनकी समस्या का समाधान किया जाता हैं, एवं उनके सुझाव पर आवश्यकतानुसार अमल क़िया जाता है ।

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

लोमडी और सारस

एक बार की बात है, एक जंगल में चालाक लोमड़ी था जो हर किसी जानवर को अपनी मीठी बातों में फंसा कर कुछ न कुछ ले-लेता था या खाना खा लेता था. उसी जंगल में एक सारस पक्षी रहता था. लोमड़ी ने अपने चालाकी से उसे दोस्त बनाया और खाने पर घर बुलाया. सारस इस बात पर खुश हुआ और लोमड़ी के घर खाने बार जाने के लिए आमंत्रण स्वीकार कर लिया.

अगले दिन सारस, लोमड़ी के घर खाने पर पहुंचा. उसने देखा लोमड़ी उसके लिए और अपने लिए एक-एक प्लेट में सूप ले कर आया है. यह देख कर सारस मन ही मन बड़ा दुखी हुआ क्योंकि लम्बे चोंच होने के कारण वह प्लेट में सूप नहीं पी सकता था.

लोमड़ी ने चालाकी से सवाल पुछा - मित्र सूप कैसा लग रहा है. सारस ने उत्तर दिया - यह बहुत अच्छा है पर मेरे पेट में दर्द है इसलिए में नहीं पी पाउँगा और वह चला गया.

हमें अनेक लेखकों ने कहानी पूरी करके भेजी है. इनमें सु कुछ को हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं -

कन्हैया साहू (कान्हा) व्दारा पूरी की गई कहानी

सारस दुखी मन से घर चला गया. वह अब मन ही मन लोमड़ी को सबक सिखाने का उपाय सोचने लगा. कुछ दिनों के बाद उसने लोमड़ी को अपने घर भोज पर आने का निमंत्रण दिया. अगले दिन लोमड़ी सजधज कर सारस के घर जाने के लिए निकल पड़ा. सारस ने बहुत ही जोश के साथ अपनी मित्र लोमड़ी का स्वागत किया और उसे अपना घर दिखाया. लोमड़ी मन ही मन बहुत खुश था कि आज कुछ मजेदार खाना खाने को मिलेगा. कुछ देर बाद लोमड़ी को खाने के लिए बैठक में बैठने को कह कर सारस रसोई घर से दो सुराही जैसे लंबी गर्दन वाले बर्तनों में मीठी खुशबू से भरपूर खीर लाई और लोमड़ी से खीर खाने का निवेदन कर खुद भी खाने लगा. लोमड़ी उस सुराही जैसे बर्तन में अपना मुंह ही नहीं डाल पा रहा था और खीर नहीं खा पा रहा था. अब लोमड़ी को अपने उस व्यवहार की याद आई जो उसने सारस को अपने घर बुलाकर किया था. उसे समझ में आ गया कि सारस उससे बदला ले रहा है और वह बहाना बनाकर घर जाने लगा. इधर सारस समझ गया कि लोमड़ी को सबक मिल गया है. अब सारस ने भी पुरानी बात को भुलाकर लोमड़ी को वापस बुलाया और एक बड़ी सी थाली में बहुत सारी खीर खाने के लिए दी. इसे देखकर लोमड़ी बहुत खुश हुआ. वह जल्दी-जल्दी खीर खाने लगा. खाना ख़त्म होने के बाद दोनों ने बहुत देर तक बातें की. खेल भी खेलें. तब से लोमड़ी ने किसी से भी चालाकी दिखाना छोड़ दिया. दोनों मित्र खुशी-खुशी अपना समय बिताने लगे.

सीख - प्रेम-व्यवहार से दुष्टों के भी आचरण को बदला जा सकता है.

संतोष कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी

वहां से जाने के बाद बेचारे सारस पक्षी को लोमड़ी की चालाकी का आभास हो गया. परंतु उसने अपने मित्र की निंदा करना उचित नहीं समझा. बल्कि उसे उसी के अंदाज में सबक सिखाने की सोची. फिर उसने भी लोमड़ी से कहा मित्र मैंने तो आपका आतिथ्य स्वीकार किया जो कि बहुत ही अच्छा था, तो कृपा कर एक बार आप भी मेरे गरीब की कुटिया में पहुंचे, और मुझे भी सेवा का अवसर प्रदान करें. यह सुनकर चालाक लोमड़ी अत्यंत प्रसन्न हुई और उसने सारस के यहां जाने की हामी भरी.

सारस अपने जन्मदिन के कार्यक्रम में सभी मेहमानों के लिए विभिन्न प्रकार के पकवान एवं जो भी जीव जंतु जिस प्रकार का भोजन करते हैं उसी प्रकार का भोजन बनवाता है. कुछ देर पश्चात सारस व्दारा बुलाए हुए सभी मेहमान घर में उपस्थित हो जाते हैं. आए हुए सभी मेहमान सारस को विभिन्न प्रकार के गिफ्ट और जन्मदिन की बधाई देते हैं. तत्पश्चात सारस प्यार से सभी को भोजन करने के लिए आग्रह करता है. सभी अपनी इच्छानुसार भोजन करते हैं और सारस व्दारा किए हुए प्रबंध पर सभी खुश होते हैं.

इधर लोमड़ी भी आता है और एक कोने में बैठ जाता है. उसे सारस की व्यवस्था को देखकर अचंभा होता है. साथ ही अपने किए पर पछतावा करते हुए लोमड़ी सोचता है कि सारस को एक कप सूप देने के लिए मैने कितनी चालाकी की. उस दिन मैंने उसे भूखा ही रखा. मैं कितना बुरा हूं. लोमड़ी यह सब सोच ही रहा था तभी सारस वहां पहुंचता है और कहता है कि लोमड़ी भैया कुछ और चीजों की आवश्यकता हो तो बताइए.

लोमड़ी अपने किए की पछतावा करते हुए सारस को अपना चेहरा दिखा नहीं पा रहा था. लोमड़ी रोते हुए सारस से हाथ जोड़कर कहता है कि भाई सारस मैं उस दिन के किए कार्य पर बहुत शर्मिंदा हूं. आपसे हाथ जोड़कर क्षमा मांगता हूं कि ऐसी गलती मैं कभी नहीं करूंगा. इधर सारस उसे क्षमा कर, प्यार से बैठा कर

भोजन कराता है. इस घटना को घर में आए हुए सभी मेहमान देखते है. सभी सारस के व्यवहार को देखकर खुश हो जाते हैं.

शिक्षा - हमें किसी को सुधारना है तो बदले की भावना से नहीं बल्कि बिना शारीरिक दंड दिए, प्यार से सुधारना चाहिए.

इंद्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी

वहां से जाने के बाद बेचारे सारस पक्षी को लोमड़ी की चालाकी का आभास हो गया. परंतु उसने अपने मित्र की निंदा करना उचित नहीं समझा. बल्कि उसे उसी के अंदाज में सबक सिखाने की सोची. फिर उसने भी लोमड़ी से कहा मित्र मैंने तो आपका आतिथ्य स्वीकार किया जो कि बहुत ही अच्छा था अब कृपा कर एक बार आप भी मुझ गरीब की कुटिया में पधारें और मुझे भी सेवा का अवसर प्रदान करें. यह सुनकर चालाक लोमड़ी अत्यंत प्रसन्न हुई और उसने सारस के यहां जाने की हामी भर दी.

फिर वह दिन आ ही गया जब लोमड़ी को सारस के यहां दावत पर जाना था. लोमड़ी बन-ठन कर ज्यादा खाना खाने के लालच से बिना कुछ खाए ही सारस के घर चल पड़ी. वहां पहुंचते ही उसे मछली की खुशबू आने लगी. उसे पता चल गया कि सारस ने दावत में मछली बनाई है. लोमड़ी के घर पहुंचते ही सारस ने उसे ससम्मान चटाई पर बैठाया और कहा मित्र दावत तैयार है, यदि आपकी आज्ञा हो तो भोजन पेश करूं. लोमड़ी ने हामी भरी. अंदर से स्वादिष्ट मछली की खुशबू आ रही थी. इसे सूंघ-सूंघ कर लोमड़ी बड़ी ही आनंदित हो रही थी. फिर सारस ने दो बड़े से गड्ढे वाले पात्रों में लोमड़ी के समक्ष स्वादिष्ट मछली का व्यंजन पेश किया. दोनों खाने के लिए बैठे. सारस अपनी लंबी गर्दन की सहायता से अपने पात्र में से मछली निकाल-निकाल कर बड़े मजे से चाव के साथ खा रहा था परंतु लोमड़ी का मुंह अपने पात्र के अंदर पहुंच ही नहीं पा रही था. इतने में सारस की आवाज आई - मित्र व्यंजन कैसा है. मजबूरन लोमड़ी को व्यंजन की खुशबू के सहारे ही उसकी तारीफ करनी पड़ी. भूख के मारे उसका बुरा हाल हो

चुका था. फिर भी उसे कहना पड़ा मित्र व्यंजन तो बहुत ही अच्छा है. और इस तरह लोमड़ी को भूखा रहना पड़ा और उसे अपने उस दिन की याद आई जब उसने सारस के साथ भी ऐसा ही किया था. इसे कहते हैं जैसे को तैसा.

अगले अंक हेतु अधूरी कहानी

मित्रता

एक गांव में दो मित्र रहते थे. एक का नाम था चंदन, दूसरे का गुलाब. दोनों की मित्रता इतनी गहरी थी कि लोगों को इनसे बड़ी ईर्ष्या होती थी. कई लोग यह कोशिश भी करते थे कि किसी तरह इनकी मित्रता टूट जाए.

कुछ दिनों बाद चंदन के परिवार को दूसरे गांव में जाकर बसना पड़ा. अब इनका रोज का मिलना बंद हो गया. पर इन्होंने एक दूसरे को चिट्ठियां लिखनी शुरू कर दीं. बहुत दिनों तक ये सिलसिला चलता रहा. फिर पता नहीं क्या हुआ, गुलाब

की चिट्ठियां आनी बंद हो गईं. चंदन बड़ी प्रतीक्षा करता था. उसने गुलाब को लिखना जारी रखा पर गुलाब का कोई उत्तर नहीं आता था.

चंदन अब उदास रहने लगा था. उसे समझ में नहीं आता था कि अचानक ये क्या हो गया. एक दिन वह अपने पिताजी से पूछकर अपने पुराने गांव की ओर चल पड़ा.

(इसके बाद क्या हुआ, यह आप हमें लिख कर भेजें। आपकी कहानी हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे)

बसंत पंचमी के तिहार

लेखक -महेन्द्र देवांगन "माटी"

बसंत ऋतु ल सब ऋतु के राजा कहे जाथे. काबर के बसंत ऋतु के मौसम बहुत सुहाना होथे. ए समय न जादा जाड़ राहे न जादा गरमी. ए ऋतु में बाग बगीचा सब डाहर आनी बानी के फूल फूले रहिथे अउ महर महर ममहावत रहिथे. खेत में सरसों के फूल ह सोना कस चमकत रहिथे. गेहूं के बाली ह लहरावत रहिथे. आमा के पेड़ में मउर ह निकल जाथे. चारों डाहर तितली मन उड़ावत रहिथे. कोयल ह कुहू कुहू बोलत रहिथे. नर नारी के मन ह डोलत रहिथे. ए सब ला देखके मन ह उमंग से भर जाथे. एकरे पाय एला सबले बढ़िया ऋतु माने गेहे.

बसंत पंचमी ल माघ महिना के पंचमी के दिन याने पांचवां दिन तिहार के रुप में मनाय जाथे. ये दिन ज्ञान के देवइया मां सरस्वती के पूजा करे जाथे. एला

रिसी पंचमी भी कहे जाथे. ए दिन पीला वस्तु अऊ पीला कपड़ा के बहुत महत्व हे. आज के दिन सब मनखे मन पीला रंग के कपड़ा पहिर के पूजा पाठ करथे.

बसंत पंचमी के दिन ल शुभ काम के शुरुवात करे बर बहुत अच्छा दिन माने गेहे. जइसे - नवा घर के पूजा पाठ, छोटे लइका के पढ़ाई लिखाई के शुरुवात, नींव खोदे के काम, दुकान के पूजा पाठ, मोटर गाड़ी के लेना आदि.

बसंत पंचमी के कथा - जब ब्रम्हा जी ह संसार के रचना करीस त सबसे पहिली मानुस जोनी के रचना करीस. फेर वोहा अपन रचना से संतुष्ट नइ रिहीस. काबर के आदमी मन में कोई उतसाह नइ रिहीस. कलेचुप रहे राहे. तब विष्णु भगवान के अनुमति से ब्रम्हा जी ह अपन कमंडल से जल (पानी) निकाल के चारो डाहर छिड़कीस. एकर से पेड़ पौधा अऊ बहुत अकन जीव जंतु के उतपत्ति होइस.

एकर बाद एक चार भुजा वाली सुंदर स्त्री भी परगट होइस. ओकर एक हाथ में वीणा दूसर हाथ में पुस्तक तीसर हाथ में माला अऊ चौथा हाथ ह वरदान के मुद्रा में रिहीस. ब्रम्हा जी ह ओला वीणा ल बजाय के अनुरोध करीस. जब ओहा वीणा ल बजाइस त चारो डाहर जीव जंतु पेड़ पौधा अऊ आदमी मन नाचे कूदे ल धरलीस. सब जीव जंतु में उमंग छागे. जीव जंतु अऊ आदमी मन ल वाणी मिलगे. सब बोले बताय बर सीखगे. तब ब्रम्हा जी ओकर नाम वाणी के देवी अऊ स्वर के देने वाली सरस्वती रखीस. मां सरस्वती ह विदया अऊ बुध्दि के देने वाली हरे. संगीत के उतपत्ति मां सरस्वती ह करीस.

ए सब काम ह बसंत पंचमी के दिन होइस. एकरे पाय बसंत पंचमी ल मां सरस्वती के जनम दिवस के रुप में मनाय जाथे.

बसंत पंचमी के तिहार ह खुशी अऊ उमंग के तिहार हरे. ये दिन पतंग उड़ाय के भी परंपरा हे. आज के दिन छोटे बड़े सब आदमी पतंग उड़ाथे अऊ खुशी मनाथे. कतको जगा पतंग उड़ाय के प्रतियोगिता भी होथे.

ए प्रकार से बसंत पंचमी के तिहार ल सब झन राजीखुशी से मनाथे अऊ एक साथ मिलके रहे के संदेश देथे.

फसलों और पेड़ों के नाम खोजो

कुमारी दिलेश्वरी मरावी, प्राथमिक विद्यालय बेलगहना, मार्गदर्शिका शिक्षिका- श्वेता तिवार

तुम कई दिनों तक विद्यालय नहीं आए
सब लोग नाच- नाच कर थक गए
हम सूरदास के भजन गाते हैं
मीराबाई को हरिनाम का चाव लग गया
एक दिन राधा नहा रही थी
धोखेबाज रावण सीता जी को उठा ले गया
चीनी और नमक पास में ही पड़े हैं
ज्योति लकड़ी लेने वन में गई
खेलने से पढ़ाई खराब नहीं होती
चिड़िया उड़ दक्षिण की ओर
चिड़िया वाली कहानी मज़ेदार है
जंगलों में लंबे-लंबे लतायुक्त पेड़ हैं
आप सभी को नया साल मुबारक हो
जा,अपनी कॉपी पलट कर तो देख
सब बालक रंजन के साथ जाएँगे
अतुल सीटी बजा रहा है
साबुन से मलमल के नहाए
बाजार से सूप ला, शक्कर ला, तो अच्छा
फर्श की गोबर से लिपाई करो
सीता रोज वाटिका में जाती थी

उत्तर - मकई, चना, मसूर, चावल, धान, बाजरा, कपास, तिल, ईख, उड़द, नीम, बेल, साल, पीपल, करंज, तुलसी, सेमल, पलाश, बर, जवा

शून्य निवेश पर आधारित माडल - मानव का पाचन तंत्र

संकलित -शासकीय उच्च प्राथमिक शाला लांती ,संकुल केन्द्र - लांती द्वारा

प्रेषित

कबाड़ से जुगाड़ के माध्यम से स्वनिर्मित

उद्देश्य :- पाचन अंगों की पहचान करना एवं क्रियाविधि की समझ विकसित करना

आवश्यक सामग्रियाँ :- गत्ते,लचीली पाईप,कोयला,ईंट के टुकड़े, ब्लेड, टूटी छन्नी आदि

सिद्धांत :- जटिल अणुओं का सरल अणुओं में टूटना / विघटन होना.

जटिल कार्बनिक पदार्थों को जल अपघटनीय एन्जाइमों के द्वारा सरल कार्बनिक पदार्थों में बदलने की क्रिया पाचन कहलाती है. निम्न श्रेणी के जीवों में अंत:कोशिकीय पाचन एवं उच्च श्रेणी के जीवों में बाह्य कोशिकीय पाचन होता है

निर्माण विधि :- गत्ते को लेकर उसमें कोयले के माध्यम से आहारनाल एवं पाचक अंगों का एक कल्पित स्वरूप बना लें. उसके ऊपर में नलिकाकार पाइप को आहारनाल एवं आंत,मलद्वार का स्वरूप देते हैं और वृक्क की रचना छलनी से बनाते हैं. यदि आप इसे स्थायी रखना चाहते हैं तो किसी प्रकार के गोंद से चिपका लें.

क्रिया विधि :- मनुष्य का पाचन तंत्र पाचन अंग एवं सहयोगी पाचक ग्रंथियों से मिलकर बनता है. पाचक अंग - आहारनाल,मुखगुहा,ग्रसनी,ग्रसिका,आमाशय,छोटी आंत,बड़ी आंत, मलाशय और मलद्वार से बनी होती है जबकि पाचन ग्रंथियों में लार ग्रंथि,यकृत,पित्ताशय, अग्नाशय शामिल होते हैं. आहार के प्रमुख घटक - कार्बोहाईड्रेट,प्रोटीन,वसा,विटामिन,खनिज लवण एवं जल है. पाचन का प्रयोजन वृहद् अवयवों को सरल अवयवों में विघटन कर उपयोगी पदार्थों का अवशोषण एवं वर्ज्य पदार्थों का निष्कासन करना है. छोटी आंत में अवशोषण का कार्य होता है. पाचन में आन्त्रगति / क्रमाकुंचन गति की भूमिका महत्वपूर्ण होता है .

सावधानियाँ :- डाईग्राम सही बनाएँ एवं सावधानी से काटकर रखें.

निष्कर्ष :- पाचन अंग/ग्रंथि एवं क्रियाविधि की समझ बनती है.

लर्निंग आउटकम्स :- कक्षा 8 LOC`s 09 -10 एवं आंशिक रूप से 14 को पूरा करता है.

भाखा जनउला

भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी शब्द पहेली)

1 ज		■	2		■	3 भो		4	■
	■	5 कु					■	6	7
■	■		■	■	■		■	8 ग	
9 चै					■	10 दे			■
■	■		1	■	■		■	■	■
11 अ			■	12 टां	13	■	14 म	15	
	■	■	16 मै	■		■	■		■
17				■	18 द				■
■	■	■		■		■	■	■	19 ख
20 त्ति				■		■	21		

बाएँ से दाएँ-

1. बुखार 2. पुरे चन्द्रमा की रात्रि 3. रक्षाबंधन के बाद विसर्जन होने बाला 5. छ.ग. की प्रशिद्ध गुफा 6. उधार 8. दवा 9. छ. ग. का कश्मीर 10. छ. ग. का एक समुदाय या जाति जिनके नाम के नृत्य एवं गीत प्रसिद्ध हैं 11. एक हिंदी महीने का नाम 12. कुल्हाड़ी 14. दबा 17. कान से लटकने वाला आभूषण 18. बस्तर के प्रसिद्ध मंदिर 20. प्रसिद्ध जलप्रपात २१ महानदी का उद्गम पर्वत स्थल

ऊपर से नीचे-

1. प्रसिद्ध 2.बारिश में पैरा में उगने वाली एक वनस्पति 3. छत्तीसगढ़ का खुजराहो 5. सरगुजा के प्रसिद्ध मंदिर यहाँ स्थित है| 7. भैंसा गाड़ी 11. आलसी' 13. गुरु घासीदास बाबा का जन्मस्थान 15. शबरी का ग्रामीण छत्तीसगढ़ी नाम 16. छत्तीसगढ़ का शिमला 19. मिट्टी का अहाता

इस अंक के भाखा जनउला के उत्तर अगले अंक में दिये जायेंगे